पंचवटी

पंचवटी

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

PANCHBATI (पंचवटी)
Ekanki sanchayan: A collection of one-Act Plays by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-40-7
दाम: 350/- (भा.रु.)

तेसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2013, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल

फुलवाड़ी लगौनिहार एवम्

नव विहान अननिहारकेँ

समरपित

एकांकी क्रम-

सतमाए

पात्र-परिचय

पुरुख पात्र-

बुद्धिधारी- स्कूलक प्रधानाध्यापक। उमेर- 40 बर्ख।

बिपैत बाबू- सहायक शिक्षक। उमेर- 40 बर्ख।

पुलकित- स्कूलक चतुर्थवर्गीय करमचारी। उमेर- 40 बर्ख।

चिन्तामणि- बिपैत बाबूक भावी ससुर। उमेर 60 बर्ख।

शिवकुमार- बिपैत बाबूक बेटा। उमेर 18 बर्ख।

नारी पात्र-

सुलक्षणी- बिपैत बाबूक माए। उमेर 60 बर्ख।

सावित्री- चिन्तामणिक पत्नी। उमेर- 58 बर्ख।

खजुरिया- ग्रामीण स्त्री। उमेर- 25 बर्ख।

तेतरी- खजुरियाक बहिनपा। उमेर- 25 बर्ख।

पहिल दृश्य-

विद्यालय। समय माघक ३ बजे। स्कूलक आँगनमे बुद्धिधारी बाबू (प्रधानाचार्य) बिपैत बाबू (सहयोगी शिक्षक) कुरसीपर आ पुलकित (चतुर्थवर्गीय कर्मचारी) स्टूलपर बगलमे बैस गप-सप्प करैत।

बुद्धिधारी- आब विद्यालयमे नै मन लगैए। होइए जे करवन रिटायर भऽ जाइ। करवनो कऽ तँ एहनो भऽ जाइए जे भोलेन्ट्री रिटायरमेन्ट लऽ ली।

पुलकित- से किए मास्सैब?

बुद्धिधारी- तोहूँ तँ पनरह-बीस बर्खसँ संगे रहिते छह देखिते छहक जे की मान-प्रतिष्ठा स्कूलो आ शिक्षकोक छल आ अखैन की अछि।

पुलकित- ऐ जुगमे मान-प्रतिष्ठा लऽ कऽ धो-धो चाटब। भने दिन-राति दरमाहा बढ़बे करैए, सुखसँ जीबू।

बुद्धिधारी- *(कनडेरीए आँखिए पुलकित दिस देख)* तूँ जे सबाल उठेलह पुलकित, ओ बड़-भारी अछि। मुदा प्रश्न तोहर छिअ तँए जवाब देब उचित भऽ गेल। *(जिज्ञासासँ बिपैत बाबू बुद्धिधारी बाबूक नजैरपर*

आँखि गाड़ि मनकेँ असथिर कऽ सुनैक बाट तकै छैथ...)

पुलकित- मास्सैब, जहिना खेतक आड़ि-धूड़ बाढ़िक बेगमे बिगैड़ जाइत तहिना भऽ गेल अछि।

(पुलकितक दोहरौल प्रश्नसँ बुद्धिधारी बाबूक मन आरो अमता गेलैन। मुदा धैर्यसँ शक्ति जगबैत)

बुद्धिधारी- पुलकित, जेते सुख आ चैनसँ जीबए चाहै छी ओते दुख आ बेचैनी बढ़ल जाइए। तोंही कहऽ जे बिना काजक बोइन जे भेटतह ओ अन्न देहमे लगतह।

पुलकित- *(औगता कऽ)* से केना लगत। काजमे जेते देह दुहाइत अछि ओते भूख जगै छै जेते भूख जगै छै ओते अधिक अन्न पचै छै। देह थकबे ने करत तँ भूख केना जागत। जँ भूख नै जागत तँ खाइक क्षुधा केना हएत? जेहेन खाइ अन्न तेहेन बने मन, जेहेन बने मन, जेते जगे अर्पण।

बुद्धिधारी- अपने विद्यालयक खिस्सा कहै छिअ। जइ दिनमे एलौं ओइ दिनमे एगारह गोरे शिक्षक रही आ चारू किलास मिला कऽ साढ़े चारि साए विद्यार्थी रहए। साइंस, कौमर्स आ आर्ट तीनू फेक्लटी रहए।

पुलकित-		चपरासी केतेक रहए?

बुद्धिधारी-	*(मुस्की दैत)* एक्केटा। काजो कम रहए। अच्छा सुनह। सभ किलासमे सेक्शन चलैत रहए। अखैन देखहक जे रजिष्टरमे छह साए विद्यार्थी आ सतरह गोरे शिक्षक छी।

पुलकित-		हँ, से तँ छी।

बुद्धिधारी-	मुदा की देखै छहक जे आइ मात्र चर्तुदशी छी, ने शिक्षक एला आ ने छात्र।

पुलकित-		छुट्टीक दरखास आएल कि नै?

बुद्धिधारी-	एक्कोटा नै।

पुलकित-		मास्सैब, ऐ बुढ़ाड़ीमे केते माथा-पच्ची करब। भरमे-सरम अपन जिनगी आ परिवारकेँ देखियौ।

बुद्धिधारी-	से उचित हएत?

पुलकित-	रूइया जकाँ जे माथ धुनि-धुनि उड़ेबे करब तइसँ सीरक केना बनत?

(बिपैत बाबूपर नजैर दैत)

बुद्धिधारी-	एते दिन तँ नै कहलौं बिपैत बाबू किएक तँ साल नै लगल छल मुदा आब तँ सालसँ ऊपर भऽ गेल। एकटा बात पुछू?

बिपैत बाबू-	एकटा किए हजारटा पूछि सकै छी। जखैन सभ दिन एकठाम रहै छी, एक पेशा अछि, तखैन पुछैले आदेशक की प्रयोजन?

बुद्धिधारी-	अहाँ बिआह कऽ लिअ?

बिपैत बाबू-	यएह जे दूटा बेटो-बेटी अछि।

बुद्धिधारी-	मानै छी। मुदा ई कहू जे बेटा-बेटीक उमेर केते अछि?

बिपैत बाबू-	अपने विद्यालयमे बेटा एगारहममे पढ़ैए आ बेटी नाइन्थमे।

बुद्धिधारी-	*(आंगुरपर हिसाब जोड़ि)* चौदह-पनरह बर्खक बेटा आ बारह-तेहर बर्खक बेटी हएत?

बिपैत बाबू- करीब-करीब।

बुद्धिधारी- पान-सात बर्खमे बेटी सासुर चलि जाएत। जे हवा बनि रहल अछि ओइमे जँ बेटाकेँ इंजीनियर वा एम.बी.ए. नै कराएब सेहो नै बनत।

बिपैत बाबू- जँ से नै कराएब तँ हँसारते हएत। तैपर सँ ईहो दोख लागत जे माए मरिते बेटा-बेटीकेँ बिपैत कुभेला करै छै।

बुद्धिधारी- *(किछु सोचैत)* कहलौं तँ ठीके। मुदा जँ अपना काजमे कमी नै आनब तँ लोक बाजत किए। कहुना तँ पच्चीस-तीस हजार महिना उठैबते छी। असानीसँ सभ काज चला सकै छी।

बिपैत बाबू- *(मुड़ी डोलबैत)* एक तरहक विचार अछि।

बुद्धिधारी- *(नमहर साँस छोड़ैत)* ई भार हमरा ऊपर रहल। जहिना एक-एक समस्या डोरीक सूत जकाँ बाँटल अछि तहिना ओकरा खोलि कऽ उघारि-उघारि सोझराबए पड़त।

पुलकित- *(फरैक कऽ)* मास्सैब, कँटहो बाँस तँ लोके काटि कऽ घरमे लगबैए आ ई कोन ओझरी छिऐ।

बुद्धिधारी- एक आदमीक समस्या (ओझरी) केतेकोकेँ ओझरबैए। तँए औगुता कऽ किछु बाजि देब वा करैले डेग उठा देब, अनुचित हएत। *(घड़ी देखि कऽ)* सवा तीन बजिये गेल। काजो नहियेँ जकाँ अछि। चाभी लऽ कऽ क्लासोक कोठरी आ ऑफिसो बन्न कऽ दहक।

(पुलकित चाभी लेल बढ़ए लगल। दुनू गोरे कुरसीपर सँ उठि गेला। दुनू कुरसियो आ स्टूलो ऑफिसमे रखि कोठरी बन्न कऽ पुलकित अबैए।)

बुद्धिधारी- बिपैत बाबू, अहाँक जिनगी देखि मनमे उदिग्नता उठि रहल अछि।

बिपैत बाबू- किए?

बुद्धिधारी- अपना सभ समाजक उच्च श्रेणीक रहितो जिनगी आ मनुखक रहस्य नै बुझि रहल छी। जे सहजे निम्न श्रेणीक (बौद्धिक) छैथ ओ केना बुझत। जँ से नै बुझत तँ अमती काँट जकाँ ओझरी (जिनगीक) केना छोड़ा पौत?

बिपैत बाबू- *(मुड़ी डोलबैत)* बड़ गम्भीर बात कहलौं।

बुद्धिधारी- सदैत इच्छा रहैए जे सबहक परिवार नीक जकाँ फड़ै-फुलाइ मुदा से कहाँ भऽ पबैए। जहिना आगू बढ़ल चिन्ताग्रस्त (दुखी) तहिना पछुआएल। आखिर एना होइ किए छै?

पुलकित- मास्सैब, अनेरे मन भरियौने छी। हँसि-खेल जिनगी गुदस कऽ ली सभसँ नीक।
(पुलकितक बात बुद्धिधारीक करेजकेँ आरो बेध देलकैन। मुदा कोढ़मे चोट लगने असीम दरदो होइत तँ मुहसँ हँसियो फुटैत।)

बुद्धिधारी- *(मुस्की दैत)* पुलकित, औझका दरमाहा तँ फोकटेमे भेल किने?

पुलकित- फोकटमे केना भेल। भरि दिन बरदाएल जे रहलौं।

बुद्धिधारी- अच्छा चलह संगे, तोरे ऐठाम चाह पीब।

पुलकित- दुआर पर तँ नहियेँ पीआएब दोकानमे जरूर पीआ देब।

बुद्धिधारी- से किए?

पुलकित-		घरवाली व्रत केने छैथ। ओ तँ अनेरे पेटकान लधने हेती। तैपर चाह बनबए कहबैन। बाढ़ैन सूप छोड़ि आरो किछु भेटत।

बुद्धिधारी-		तखैन तँ तोहर घरवाली बड़ धर्मात्मा छथुन?

पुलकित-		सोलहन्नी। बिना धरमत्मे भरि दिन खटै छी आ दरमाहा हुनका हाथ पड़ै छैन।

बुद्धिधारी-		धर्मो केते रंगक होइए?

पुलकित-		मास्सैब, अहीं मुहेँ ने सुनने छी, जेते रंगक लोक तेते रंगक धरम। कियो कोदारि पाड़ि पसिना चुबा धरम-करम (धर्म-कर्म) बुझैए, तँ कियो बम-गोली लऽ धर्म-कर्म बुझैए। कर्म तँ दुनू करैए। ❍❍

शब्द संख्या: 879

दोसर दृश्य-

(बिपैत बाबूक दरबज्जा। सुलक्षणी माए आ शिव कुमार (बिपैत बाबूक बेटा) दरबज्जापर बैसल। (बुद्धिधारी, बिपैत बाबू आ पुलकितक प्रवेश। सुलक्षणीकेँ गोड़ लगैत बुद्धिधारी। उठि कऽ ठाढ़ होइत सुलक्षणी कुरसीकेँ आँचरसँ झाड़ैत।)

सुलक्षणी- ऐपर बैसू। (बुद्धिधारीकेँ बैसते) बाल-बच्चा सभ आनन्दसँ छैथ किने?

बुद्धिधारी- भगवानक कृपासँ सभ आनन्दित अछि।

सुलक्षणी- भगवान नीक करैथ। अहिना सभ दिन परिवार फुलाइत-फड़ैत रहए।

बुद्धिधारी- एकटा विचार लेल एलौं?

सुलक्षणी- हम कोन जोकरक छी जे अहाँकेँ विचार देब। तखैन तँ जे बुझै छी सएह ने कहब।

बुद्धिधारी- बिपैत बाबूकेँ बड़ कष्ट होइ छैन। तँए विचार भेल जे ओ दोसर बिआह कऽ लैथ।

सुलक्षणी- *(कनीकाल चुप रहि)* जहिना बेटा बिपैत अछि तहिना अहूँकेँ बुझै छी बौआ। तँए बजैमे धड़ी-धोखा नै होइए। हमर आशा केते दिन? वृद्ध भेलौं, करवन छी करवन नहि, तेकर कोनो ठेकान नै अछि।

बुद्धिधारी- तँए ने विचार करबाक अछि।

सुलक्षणी- दुनियाँमे ने सभ मनुख एक रंग अछि आ ने एक रंग चालि-ढालि छै। निको छै अधलो छै।
(कहि चुप भऽ जाइत)

बुद्धिधारी- अहाँक विचार की अछि?

सुलक्षणी- के अपन परिवारकेँ उजड़ैत-उपटैत देखए चाहत।

बुद्धिधारी- अपन जे अखैन परिवार अछि, ओ केना लहलहाइत रहत अइले ने विचारैक जरूरत अछि?

सुलक्षणी- बिपैत हमर बेटा छी आ शिवकुमार पोता छी। दुनू केना नीक-नहाँति जिनगी बितौत सएह ने मनमे अछि। पोती तँ पाँच बर्खक पछाइत सासुर जाएत।

बुद्धिधारी- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, कहलौं तँ नीके, मुदा ..?

सुलक्षणी- मुदा की?

बुद्धिधारी- मुदा यएह जे जहिना पोखैरमे करहर-सौरखीक जनमौटी गाछक पात पकैड़ ओरिया कऽ गाछ पकैड़ जड़िमे (निच्चाँमे) पहुँच उखाड़ल जाइत अछि तहिना केलासँ परिवारक कल्याण हएत।

सुलक्षणी- बौआ, अहाँक बात नै बुझलौं?

बुद्धिधारी- परिवारमे जेते गोरे छी सबहक जिनगीक डोरि पकैड़-पकैड़ ठौर धरबए पड़त। तखने जा कऽ सुढ़ियाएत।

सुलक्षणी- *(मुड़ी डोलबैत)* कहलौं तँ ठीके मुदा समाजो तँ तेहेन अछि जे नीक-अधला बात बाजि मनकेँ घोर कऽ दैत अछि। जइसँ लोकक विचारमे धक्का लगै छै। *(कहि चुप भऽ जाइत)*
(बिच्चेमे पुलकित)

पुलकित- मास्सैब आ चाची, दुनू गोरेकेँ कहै छी। बिपैत भाय एकबतरीए हेता। हमर जे घरवाली मरल रहैत तँ केकरोसँ पुछबो ने कैरतिऐ आ दोहरा कऽ बिआह कऽ नेने रहितौं। *(पुलकितक बात सुनि)*

बुद्धिधारी- *(हँसैत)* पुलकित, परिवारक संग समाजोक विचार करए पड़ै छै।

पुलकित- समाजकेँ अपने ठेकान नै छै। निकोकेँ अधला कहैए आ अधलोकेँ नीक।

बुद्धिधारी- हँ, से तँ अछि।

पुलकित- (अपना विचारपर जोर दैत) मास्सैब, जे समाज केकरो घर नै बना सकैए ओकरा कोन अधिकार छै जे केकरो घर उजाड़ै।

बुद्धिधारी- कहलह तँ ठीके मुदा औगताइमे किछु करबो तँ सभ नीके नै होइत अछि। अधलो भऽ सकैए।

पुलकित- हँ, से तँ होइतो अछि।

बुद्धिधारी- तँए ने विचारक जरूरत अछि। तूँ तँ बिपैत बाबूक परेशानी देखि धाँइ दऽ बजलह। तोहर विचार कटैबला नै छह।

पुलकित- एकबेर आरो चाह पीबू तखैन मन आरो खनहन हएत। जइसँ झब दऽ रस्ता भेटत।
(पुलकितक बात सुनि)

बिपैत बाबू- बौआ (शिवकुमार) चाह बनौने आबह। पुलकितक कपमे कनी बेसी कऽ चीनी देने अबिहऽ।

पुलकित- हम की आन दुआरे चाह पीबै छी मीठे दुआरे पीबै छी की। जावतो जीबै छी तावतो जँ हँसी-खुशीसँ नै जीयब तँ अनेरे जीबिए कऽ की करब।
(चाह अबैए सभसँ पहिने पुलकितेक कप बढ़बैए।)

बुद्धिधारी- हमरो कपक चाह कनी पुलकितमे ढारि दहक।

पुलकित- ऍंह, मास्सैब केहेन गप बजै छी। अनकर हिस्सा खाएब से पचत।

बुद्धिधारी- *(हँसैत)* हमरा आन बुझै छह?

पुलकित- नै मास्सैब, मुहसँ निकैल गेल। अच्छा कनी ढारि दियौ।

(चाह पीब पान खा)

बुद्धिधारी- चाची, बिपैत बाबू जँ दोसर बिआह करैथ तँ अहाँकेँ कोनो विरोध नै ने?

सुलक्षणी- नै। आब हमरा की चाही। वस एतबे ने जे पाँच कर भोजन आ पाँच हाथ वस्त्र भेटैत रहए।

बुद्धिधारी- बाउ, शिवकुमार, अहाँ मनमे की बनैक (पढ़ैक) विचार अछि?

शिवकुमार- अखैन तँ हाइए स्कूलमे छी। मुदा मनमे अछि जे चाहे इंजीनियरिंग वा एम.बी.ए. पढ़ी।

बुद्धिधारी- बहुत बढ़ियाँ। मुदा जखैन इंजीनियर वा एम.बी.ए. करबह तखैन तँ नोकरी करए कारखाना वा शहर-बजार जेबह। परिवारो (पत्नी) जेथुन।

(शिवकुमार गुम भऽ जाइत अछि)

बुद्धिधारी- चुप किए भेलह। बाजह।

शिवकुमार- हँ।

बुद्धिधारी- बात तोंही कहऽ जे दादी मरि जेथुन, तों परिवारक संग शहर चलि जेबह, बहिन सासुर चलि जेतह, ऐठाम बिपैत बाबूक दशा की हेतैन?

शिवकुमार- मास्सैब, अहाँ बाबूक संगीए टा नै छिऐन, गुरुओ छी। अपने जे कहब शिरोधार्य अछि।

बुद्धिधारी- बिपैत बाबू, दुनियाँमे मनुख खराब नै होइत अछि। ओकरा बनबैमे नीक-अधला होइ छै। जइसँ नीक-अधला बनैए।

पुलकित- हँ, से तँ होइ छै।

बुद्धिधारी- माए लेल बेटा-बेटी, बेटा-बेटी लेल पिता आ पत्नी (बिआहक पछाइत) लेल पति बनि आगूक जिनगी बना जीब। यएह अन्तिम बात अछि। पुलकित एकटा कनियाँ ताकह।❍❍

शब्द संख्या: 711

तेसर दृश्य-

(तेतरी आ खजुरिया विपरीत दिशासँ अबैत बाटपर भेँट।)

खजुरिया- फुल केतए दौगल जाइ छी। पएरपर पएर नै पड़ैए?

तेतरी- की कहब फुल, देखियौ जे सुरूज सिरपर आबि गेल, अखैन तक भानस नै चढ़ैलौं। अपने (पति) नहाइले गेल हेता भानस चढ़ेबे ने केलौं।

खजुरिया- किए ने अखैन तक भानस चढ़ेलौंहेँ?

तेतरी- की पुछै छी फुल, *(मुस्की दैत)* रजकुमराकेँ देखियौ जे पहिलुका *(विआही)* बहु छोड़ि कऽ अबलट लगाकेँ चलि गेल छेलै जे ऐहेन पुरुखसँ खनदान नै बढ़त। जखैन ओ (रजकुमरा) चुमौन कऽ लेलक तखैन फेर घूमि कऽ अपने फुरने चलि आएल।

खजुरिया- चलि एलै तँ रखि लिअ। जहिना अबलट लगा पड़ाएल जे ऐ पुरुखसँ खनदान नै बढ़तै तहिना

कमाएत-खाएत अपन रहत। जखैन रहैक मन हेतै रहत जाइक मन हेतै जाएत। तइले एते मत्था–पच्ची करबाक कोन जरूरत छै?

तेतरी- जेहने खेलाड़ि मौगी छै तेहने रजकुमरा अपने अछि। हँसि-हँसि बजैत रहैए तँए बुझै छिऐ। नमरी अछि, नमरी।

खजुरिया- ओइ पाछू अहाँक भानसक अबेर किए भऽ गेल। झगड़ा केकरो आ काज छुटि गेल अहाँकेँ?

तेतरी- नून आनए दोकान विदा भेलौं आकि हल्ला सुनलिऐ, भेल जे केकरो किछु भऽ गेलै। ससरि कऽ गेलौं तँ यएह रमा-कठोला देखलिऐ। ओही लटारममे लागि गेलौं।

खजुरिया- फेर भेलै की?

तेतरी- की हेतइ। मन दुनूक लसिआएल बुझि पड़ल। मुदा हारल तँ दुनू अछि। लाजे लोक लगमे की बाजत तँए दुनू अनकर मन पतियबै छै। अखैन जाए दिअ फुल। निचेनमे सभ गप कहब।

खजुरिया- भानस हेबे करतै मुदा अदहा गप कहि कऽ छोड़ि देलिऐ। अखैनसँ पेटमे उनटैत-पुनटैत रहत। अनका

पुरुख जकाँ की हिनकर पुरुख छैन जे मुँह अलगौतैन?

तेतरी- मुँह जे अलगौत से कोन सपेतकऽ। कमा कऽ हाथमे आनि दइ छैथ मुदा नूनसँ हरैद धरि तँ हमरे जोरह पड़ैए। भरि दिन दौगैत-दौगैत तबाह रहै छी।

खजुरिया- एकटा गप सुनलिऐ हेन?

तेतरी- की? नै!

खजुरिया- गाममे नै छेलखिन?

तेतरी- गाममे की कोनो एक्केटा गप चलैए जे सभ एक्के गप सुनत? रंग-बिरंगक गप पुरवा-पछवा जकाँ सदिखन चैलते रहैए की?

खजुरिया- अखैन ईहो अगुताएल छैथ आ हमरो काज सभ अछि। करखनो निचेनमे दुनू फुल गप कऽ लेब।

तेतरी- तोहुँ हद करै छह। आ जे बिसैर जा?

खजुरिया- एहनो गप विसरल जाइए।

तेतरी- हँ, तँ विसरल जाइए कि? आ जे अहूसँ निम्मन गप आबि जाए तँ हल्लुक गप लोक बिसरिये जाइए किने?

खजुरिया- हँ, बेस कहलैथ। मुदा खरिआइर कऽ नै कहबैन। ऊपरे-झापरे कहि दइ छिऐन।

तेतरी- हँ, सएह कहऽ।

खजुरिया- पढ़ि-लिखि कऽ तँ आरो लोक गाम घिनबैए।

तेतरी- से की?

खजुरिया- एँह, की कहबैन?

तेतरी- नइ-नइ, कनी फरिया कऽ कहू।

खजुरिया- बिपैत मास्टर दोसर बिआह करता?

तेतरी- तँ ई कोन बड़-भारी बात भेल। वेचाराक स्त्री मरि गेलैन भानस-भातमे दिक्कत होइत हेतैन।

खजुरिया- एँह, अहिना बुझै छथिन।

तेतरी- से की?

खजुरिया- आइ जँ बेटा-बेटी नै रहितैन तखैन जँ करितैथ तँ एकटा सोहनगर होइतै। जखैन बेटा-बेटी ढेरबा-जवान भेल तखैन किए करै छैथ।

तेतरी- *(मुँह बन्न केने)* हूँ।

खजुरिया- हमरा काकाकेँ देखलखिन। वेचारेकेँ तँ एक्केटा बेटी भेलैन आ काकी मरि गेलैन। केतबो लोक हिला-डोला कऽ रहि गेल तैयो मानलखिन।

तेतरी- हँ, से तँ बेस कहलौं।
(कनी काल चुप रहि) हूँ... ।

खजुरिया- भानसो भातक दिक्कत की होइ छैन। अखैन हाथी सन माइयो छेबे करैन, बेटियो भानस करै जोकर भाइये गेलैन तखैन किए करै छैथ। पुरुखक किरदानी बुझबै।

तेतरी- अपने फुरने करै छैथ आकि घरोक लोकक विचार छैन?

खजुरिया- एँह, हद करै छी। अहाँ नै देखै छिऐ जे आबक बेटा-बेटी माए-बापसँ केहेन पुछै छै।

तेतरी- से तँ ठीके कहै छी। मुदा सभ की एक्के-रंग होइए। हमरे घरबला छैथ, मरैयौ बेर तक माइएक कहलमे रहला। बेटो ने मनाही केलकैन।

खजुरिया- बेटा की मनाही करतैन। चुमौन कऽ कऽ कनी घर आबए दियौ तखैन ने हुरयाहा देखबै। जहिना बुढ़ीकेँ अतर-गुलाबसँ मालिश करतैन तहिना ने बेटो-बेटीकेँ टेमपर खाइले देतैन।

तेतरी- सभ सतमाए की एक्के रंग होइए। ने सभ बिऔहती नीके होइए आ ने सभ समदाही अधले होइए। पुरुखे की सभ एक्के रंग होइए?

खजुरिया- हँ, से तँ बेस कहलौं। मुदा ओहिना नै ने लोक बजैए।

तेतरी- से बाजह। गामेमे सोनमाकेँ देखै छिऐ। जहियासँ समदाही एलै तहियासँ घरमे लछमी आबि गेलै। से तँ मनुख-मनुखपर छै।

खजुरिया- मुदा नीके औतैन तेकर कोन बिसवास?

तेतरी- से तँ ठीके।

खजुरिया- मुदा..?

तेतरी- मुदा की? यएह ने जे जेहेन परिवारक लोक रहत तेहने ने नवका मनुख बनत।

खजुरिया- ई की बिपैत मास्टरकेँ बुझै छथिन?

तेतरी- हम तँ नीके बुझै छिऐन।

खजुरिया- घुइयाँ पुरुखक चालि यएह बुझथिन। मुड़ी गोंति कऽ चललासँ हेतैन। महकारी जकाँ पुरुख होइए। तरे-तर तेना ने बिठुआ काटि लेतैन जे बुझबे ने करथिन।

तेतरी- जाए दियौ नीक की अधला अपना परिवारमे हेतैन तइसँ हमरा-हिनका की?

खजुरिया- हमरा की? एना किए बजै छी। गाम की हमर नै छी जे जेकरा जे मन फुड़तै से करत आ टुकुर-टुकुर देखैत रहब।

तेतरी- अनकर झगड़ा मोल लेब।

खजुरिया- किए ने लेब? झगड़ाक डर करब तँ एक्को दिन गाममे बास हएत।

तेतरी- *(आँखि उठा कऽ ऊपर दिस देख)* बड़ अबेर भऽ गेल। आइ बात-कथा सुनबे करब।

खजुरिया- एकटा बात तँ कहबे ने केलिऐन?

तेतरी- की?

खजुरिया- ढोरबा फेर चुमौन केलक हेन।

तेतरी- ओकरा तँ मारे धियो-पुतो आ घरोवाली छइहे?

खजुरिया- *(बिहुँसैत)* छठम छऐ।

तेतरी- निरलज्जा-निरलज्जी सभ सभ उठा कऽ पीब नेने अछि। जहिना पुरुखक धनमण्डल अछि तहिना मौगीक। एकरा सभले रौदी-दाही ऐबते अछि।❍❍

शब्द संख्या: 823

चारिम दृश्य-

(चिन्तामणिक दरबज्जा)

चिन्तामणि- *(स्वयं)* हे भगवान अधमरू जिनगीमे किए फँसौने छी। अइसँ नीक जे मौगैत दिअ। आशाकेँ जेते हृदेसँ लगबए चाहै छी ओते ओ पिछैर-पिछैर हटैत जाइए आ जिनगीकेँ अन्हार बनौने जाइए। अपनो भ्रम भेल जे आशा-निराशा (अन्हार-इजोत) केँ शब्दकोषक शब्द मात्र बुझलिऐ। मुदा आइ बुझि रहल छी जे खाली शब्दकोषेक शब्द नै जिनगी छी। एते दिन माइयो-बापक उत्तरी गरदेनमे लटकने घर-घराड़ी उपटै छल मुदा आब तेसरो उत्तरी लटकए लगल। खाएर, जे जिनगी देलह ओ तँ भोगबे करब। मुदा मरैओ बेर तक माछी जकाँ नाकपर नै बैसऽ देब। जाबे आँखि तकै छी तकै छी, बन्न हएत, हएत।

(पुलकितक प्रवेश)

अहाँ के छी, किनकासँ काज अछि?

पुलकित- आदर्श स्कूलक चपरासी छी, बुद्धिधारी बाबू पठौलैन अछि।

चिन्तामणि- *(आँखि ऊपर उठबैत)* के...। बुद्धिधारी बाबू। आदर्श स्कूलक शिक्षक। ओ तँ हमरा नै जनै छैथ, फेर...।

पुलकित- पता चललैन जे चिन्तामणिबाबूकेँ कन्या छैन। जँ ओ कन्याक बिआह बिपैत बाबूक संग करए चाहैथ तँ..?

चिन्तामणि- बिपैत बाबू...।

पुलकित- हँ-हँ। ओहो सहयोगीएक रूपमे काज करै छैथ।

चिन्तामणि- ओ अविवाहिते छैथ।

पुलकित- नै। पत्नी मरि गेलखिन। दोहरा कऽ करता।

चिन्तामणि- *(व्यग्र होइत)* दोहरा कऽ करता। सौतीनक तर तँ नै भेल। मुदा दोती बरसँ कुमारि कन्याक बिआह...। की अपन बेटीक भरि-भरि दिनक उपासक पूजाक फल भगवान यएह देलखिन। मुदा उपाइए की? मृत्युकाल साधारण खढ़ोक आशा पाबि चुट्टी धारक

धारामे उगैत-डूमैत जान बचाइए लैत अछि। आशा भेट रहल अछि। बाउ, उमेर केते छैन?

पुलकित- हम दुनू गोरे एक बत्तरिये छी। घरो एक्केठीन अछि।
(पुलकितकेँ निच्चाँसँ ऊपर माथ धरि निहारि-निहारि चिन्तामणि देखै छैथ)

चिन्तामणि- बालो-बच्चा छैन?

पुलकित- हँ। एकटा बेटा एकटा बेटी छैन।

चिन्तामणि- तखैन दोहरा कऽ किए बिआह करता?

पुलकित- माए बूढ़े छैन, बिआहक पछाइत बेटी सासुरे बसए लगतैन। नँउऐ-कौंउऐ कऽ बँचलैन बेटा। बेटो सभ तेहेन ढाठी धऽ लेलक जे ओइसँ नीक बेटीए। जे कमसँ कम पावैन-तिहारमे नै सनेस तँ वेनो पठेबे करैए। तँए जुगक अनुकूल अपन-अपन आशा बना जिनगी चलबैत रही।

चिन्तामणि- नीक-नहाँति अहाँक बात नै बुझलौं ?

पुलकित- अपने पढ़ल-लिखल नै छी मुदा संगत पाबि किछु बुझल अछि। आगू बढ़ैक होरमे समाज बिखण्डित

भऽ रहल अछि जइसँ गामक दशा दिनानुदिन गिरले जा रहल अछि।

चिन्तामणि- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ भाइए रहल अछि।

पुलकित- अहीं कहू जे किसान परिवारमे जनम लेनिहार किसान बनै छला। पूर्वजक लगौल फुलवाड़ीकेँ कोर-कमठौनक संग पानि ढारै छला जइसँ समाजक हरीअरी बढ़ैत रहल। मुदा कल-कारखाना दिस घुसैक समाजक (गामक) घर खसा रहल अछि। एहेन स्थितिमे की कएल जाए।

चिन्तामणि- बाउ, अहाँ चपरासी छी?

पुलकित- हँ। मुदा बिपैत बाबूक लंगोटिया संगी सेहो छी। हमर माए-बाप गरीब छला, नै पढ़ौलैन। ओ (बिपैत बाबू) बी.ए. पास कऽ कऽ हाइ स्कूलमे शिक्षक बनला। मुदा बच्चेसँ जहिना रहलौं तहिना अखनो छी।

चिन्तामणि- बेटा नै बेटी छी तँए जिनगीक प्रश्न अछि। ओना बिआह लेल डेग उठबैमे ने कोनो बाधा अछि आ ने संकोच। मुदा जेते अधिकार हमरा अछि तइसँ मिसिओ कम माएकेँ नै छैन। तँए डेग उठबैसँ पहिने

हुनको पूछि लेब जरूरी अछि। (जोरसँ) केतए छी कनी सुनि लिअ?
(सावित्रीक प्रवेश)

सावित्री- की कहलौं?

चिन्तामणि- *(मुस्कीआइत)* तीन सालक चिन्ता हेट भऽ रहल अछि।

सावित्री- *(बिहुँसैत)* से की? से की?

चिन्तामणि- गीताक बिआहक सूहकार आएल अछि। कनी बुझने-सुझने अबै छी। जँ किछु धएल-धरल विचार हुअए तँ अखने कहि दिअ।

सावित्री- राखल जोगाएल विचार की रहत। पेटीमे राखल पुरान साड़ी जकाँ तरेतर सभ गुमसरि गेल। पहिरै जोकर नै रहल। मुदा तैयो तँ कहबे करब जे नोर बहबैत बेटी सरापे नै।

चिन्तामणि- अहाँ अर्द्धांगिनी छी जेकर आड़िपर बेटा-बेटीक गाछ होइ छै। कोनो बात (विचार) जोर दऽ कऽ हँ नै कहाएब। अखैन समय अछि तँए मनसँ विचार देब तखने डेग उठाएब।

सावित्री- बरक विषएमे किछु कहि दिअ?

पुलकित- शरीरसँ पूर्ण स्वस्थ, हाइ स्कूलमे शिक्षक छैथ। धतपत तीस-पैंतीसक अवस्था हेतैन। पहिल कनियाँ पैछला साल मरि गेलैन। तँए परिवार लेल दोहरा कऽ बिआह करब जरूरी छैन।

सावित्री- नौकरी करै छैथ, तहूमे शिक्षक छैथ। ई तँ दीब बात भेल। जाधैर नोकरी करै छैथ ताधैर तलब भेटतैन आ छुटलाक (रिटायर) उत्तर पेन्शन। *(मुस्की दैत)* पाँच कर अन्न आ पाँच हाथ वस्त्रक दुख गीताकेँ नै हएत। गामक नाओं कहू?

पुलकित- धरमपुर।

सावित्री- गामो तँ दुसैबला नहियेँ अछि। लगो अछि। जाबे जीब ताबे आवा-जाही रहबे करत। *(पतिसँ)* एक-दूटा बात विचारणीय अछि।

चिन्तामणि- *(व्यग्र)* से की, से की?

सावित्री- जहाँ धरि उमेरक बात अछि ओहो परमपराक अनुकूले अछि। राजा दशरथ तीनटा बिआह केने रहैथ। किए केने छला? अही दुआरे ने जे पहिल

कन्याँसँ सन्तान नै भेलैन। प्रश्न अछि जे सन्तानक प्रतीक्षामे दस बरख समय लगले हेतैन?

चिन्तामणि- कनी सोझरा कऽ कहियौ?

सावित्री- सन्तान नै हेबाक घोषणा (निर्णए) दस बर्खक पछाइते ने होइ छै। तै बीच तँ ओकर प्रतिकार होइ छै। जोग-टोनसँ लऽ कऽ दबाइ-विड़ोमे दस बरख लगिए जाइत अछि।

चिन्तामणि- हँ, से तँ होइते अछि।

सावित्री- पहिलसँ तेसर पत्नीक बीच पनरह-बीस बरख लगिये जाइत अछि। ऐ हिसावसँ लड़का (बर) उपयुक्त छैथ। दोसर प्रश्न अछि दोसर पत्नीक।

चिन्तामणि- हँ, से तँ ऐछे।

सावित्री- दोसर पत्नी तँ ओतए अधला होइत अछि जेतए सौतीन बनि जिनगी चलैत। से तँ नहियेँ अछि। रहल बच्चाक सतमाए होएब? सासु लेल तँ पुतोहुए हएत।

चिन्तामणि- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ ऐछे?

सावित्री- ई तँ नीके भेल।

चिन्तामणि- केना?

सावित्री- *(हँसैत)* जहिना गुरुसँ श्रेष्ठ सतगुरु होइ छैथ तहिना।

चिन्तामणि- नै बुझलौं?

सावित्री- माएसँ श्रेष्ठ सतमाए ऐ लेल श्रेष्ठ होइत जे माए अपन (कोखिक) सन्तानक सेवा करैत (पालैत-पोसैत) जहन कि सतमाए दोसराकेँ। जँ आन बच्चाक सेवा अपन बच्चा सदृश कियो करैत तँ वएह ने सतमाए भेली।

चिन्तामणि- मुदा..?

सावित्री- हँ। अपना समाजमे सतमाएकेँ सौतिनिया डाहक प्रतीक बुझल जाइत अछि। ठाम-ठीम ऐछो। मुदा (सत-माए) सतमाए तँ ओ भेली जे अपने बच्चा जकाँ दोसरोक बच्चाकेँ बुझि सेवा करए।

चिन्तामणि- *(ठहाका मारि)* आगू बढ़ै छी।❍❍

शब्द संख्या: 895

अन्तिम दृश्य-

(चिन्तामणिकेँ पुलकित स्कूलक अँगनामे ठाढ़ कऽ बिपैत बाबू आ बुद्धिधारी बाबूकेँ बजा अनैत)
चारू गोरे बैसल।

बुद्धिधारी- अपनेक नाओं?

चिन्तामणि- लोक चिन्तामणि कहैए।

बुद्धिधारी- अपनेकेँ कन्या छैथ?

चिन्तामणि- हँ।

बुद्धिधारी- *(बिपैत बाबूकेँ देखबैत)* यएह बर (लड़का) छैथ। सहयोगी छैथ। हिनक पत्नी पैछला साल मरि गेलखिन। बृद्ध माए आ दूटा बच्चा छैन। आब अपन विचार देल जाउ?

चिन्तामणि- विद्यालयक आँगनमे बैसल छी तँए कहै छी। ओना हम बड़ गरीब छी। उनैस-बीस बर्खक बेटी अछि।

तीन सालसँ बिआहक बात मनमे नाचि रहल अछि मुदा केतौ नाकपर माछी नै बैस रहल अछि।

बुद्धिधारी- अपनेकेँ एक्को-पाइ खर्च नै हएत। बिपैत बाबू कमाइ छैथ। सभ खर्च करता।

चिन्तामणि- केहेन बात बजै छी। ई कहू जे लाम-झामसँ बरियाती नै जाएत। मुदा अपना दरबज्जापर सँ बेटी जमाएकेँ पाँच हाथ नव वस्त्र पहिरा अरिआति कऽ विदा नै करब से केहेन हएत?

बुद्धिधारी- जहन सम्बन्ध स्थापित कए रहल छी तहन भेद किए?

चिन्तामणि- जहिना आमक गाछकेँ दोसर गाछक डारिमे बान्हि कलम बनौल जाइत अछि तहिना ने दू परिवार मिलि बनैए। मुदा दुनूक अपन-अपन गुण तँ रहिते अछि।

बुद्धिधारी- नै बुझलौं?

चिन्तामणि- हमर कन्या मिथिलाक ललना छी। एकबेर जइ पुरुखसँ हाथ पकड़बैए जिनगी भरि स्वामी, पति आ गुरुभक्त बनि सेवा करैए। कहियो अपन सीमाक उल्लंघन नै करैए। भलेँ राम सन बेटाकेँ पिता

वनबास दऽ देलखिन मुदा कौशल्या बात कहाँ कटलकैन।

बुद्धिधारी- से की?

चिन्तामणि- यएह जे रामपर जेते अधिकार पिता दशरथक छेलैन तइसँ कम तँ माए कौशल्याक नै छेलैन। मुदा कहाँ अपन अधिकारक प्रयोग केलैन। आँखि मुनि सुहकारि लेलकैन।

बुद्धिधारी- *(नमहर साँस छोड़ैत)* बिपैतबाबूक परिवार अलग छैन। जेहने अपने छैथ तेहने माए छथिन। दुनू बच्चा तँ गाइयोक बच्चासँ कोमल आ सुशील अछि।

चिन्तामणि- भाग्य हमरा बेटीक जे लगौल फुलवाड़ीक माली बनि सेवा करत।

अन्तिम दृश्य, मिथिलाक बिआहक।

शब्द संख्या: 273

समाप्त।

कल्याणी

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र-

जेलर-	50 बर्ख।
चन्द्रनाथ-	कल्याणीक भाय, 35 बर्ख।
अनन्त कुमार-	कल्याणीक पिता, 60 बर्ख।
सूर्यदेव-	पढ़ल-लिखल ग्रामीण- 40 बर्ख।
निष्कान्त-	पढ़ल-लिखल ग्रामीण- 35 बर्ख।
क्षितिजदेव-	पढ़ल-खखल ग्रामीण- 35 बर्ख।

नारी पात्र-

कल्याणी-	पढ़ल-लिखल नवयुवती, 23 बर्ख।
प्रतिज्ञा-	पढ़ल-लिखल नवयुवती, 23 बर्ख।
शान्ति-	कल्याणीक माए। उमेर 55 बर्ख।

पहिल दृश्य-

(जहलक दृश्य। जेलक भीतरसँ जेलर, कल्याणी, प्रतिज्ञा आ दूटा सिपाही निकलैत। फाटकक बाहर आबि कल्याणियोँ आ प्रतिज्ञो पाछू घुरि जहलकेँ निहारि-निहारि देखैए।)

जेलर- अखैन धरि हम जेलर आ अहाँ दुनू गोरे कैदी छेलौं। मुदा आब जहिना अहाँ दुनू गोरे छी तहिना हमहूँ एकटा अदना मनुख छी। जेलक जिम्मेदार होइक नाते कहै छी जे जँ किछु अभाव भेल हुअए ओ बिसैर जाएब। संगे ईहो कहै छी जे पुन: कैदी बनि जहल नै देखी।

कल्याणी- *(मुस्कियाइत)* कहलौं तँ बड़ सुन्नर बात मुदा जैठाम एक्को इंच जमीन नारी लेल सुरक्षित नै अछि तैठाम..?

जेलर- की सुरक्षित?

कल्याणी- सुरक्षित यएह जे नारी लेल स्वतंत्र जिनगी, कल्पनाक सिवा आरो की अछि। जाधैर नारी अपन शक्तिकेँ जगा संघर्ष नै करत ताधैर मनुखक जिनगीसँ उतैर

पशुक जिनगी जीबैले बाध्य रहबे करत। तँए जरूरैत अछि अपन शक्ति नारी जगत लेल उपयोग करए। जखने आजादी लेल डेग उठौत तखने अहाँक जेल आगू ऐबे करत।

प्रतिज्ञा- केते दिन जहलक डरे नारी अपन स्वतंत्र जिनगीकेँ बान्हि कऽ रखि सकैए। जेम्हर देखू तेम्हर नारीपर अत्याचारे-अत्याचार जहिना घरक भीतर तहिना घरक बाहर। सगतैर एक्के रामा-कठोला भऽ रहल छै। घरसँ निकैलते केतौ अपहरण तँ केतौ छेड़खानी सदैतकाल होइते रहैए। एहेन स्थितिमे इज्जत-आबरूक संग जीब कहाँ धरि संभव अछि।

जेलर- *(मुड़ी डोलबैत)* किछु अंशमे अहाँ कहब मानल जा सकैए।

कल्याणी- *(झपैट कऽ)* किछु अंशमे किए कहै छिऐ हँ, ई बात जरूर जे जहिना सभ मनुखक जिनगी समान नै अछि तहिना अत्याचारोक अछि। मुदा जेहेन माहौल बनल अछि ओइसँ की आभास भेट रहल अछि।

जेलर- *(नमहर साँस छोड़ैत)* खाएर, हमर ओकातिये केते अछि जे अहाँक सभ प्रश्नक उत्तर दऽ सकै छी। मुदा

एते जरूर आग्रह करब जे पुन: जहलक आँखि नै देखी।

कल्याणी- जँ जहलक डर करब तँ जिनगी केना भेटत। हँ, ई बात जरूर जे छोटसँ छोट आ पैघसँ पैघ सैकड़ो घेराक बीच जहलो एकटा घेरा छी। मुदा ओकरा टपैक तँ दुइए टा उपाय अछि। या तँ कूदि कऽ टपि जाए वा तोड़ि दिअए।

जेलर- *(मुड़ी डोलबैत)* धिया-पुताक खेल नै छी।

कल्याणी- मानै छी जे धिया-पुताक खेल नै छी मुदा अहूँ सुनि लिअ जे जइ पैरुख पाबि नर पुरुख कहबैक अधिकारी बनल अछि ओ सिरिफ पुरुषेक नै नारीओक धरोहर सम्पदा छी। अखैन धरि नारी जगतक नजैर ओइ दिशा दिस नै बढ़ल अछि तँए आँखि मूनि सभ अत्याचार झेल रहल अछि। जखने ओइ दिशा दिस देखि आगू डेग उठौत तखने...।

जेलर- *(मुस्कियाइत)* हमर शुभकामना अहाँ सबहक संग अछि।

(कल्याणी आ प्रतिज्ञा आगू बढ़ैत। दुनू सिपाही फाटकक भीतर प्रवेश करैत। बीचमे जेलर ठाढ़ भऽ कल्याणी दिस देखैत। दू डेग आगू बढ़ि कल्याणी

पाछू घूमि कऽ तकैत। दुनूक-जेलर आ कल्याणी-आँखिपर आँखि पड़िते कल्याणी मुस्किया दैत। जेलर आँखि निच्चाँ कऽ लैत। पुन: कल्याणी आगू डेग उठबैत। जेलरो भीतर दिस प्रवेश करैत। एकटा पएर भीतर आ एकटा पएर बाहर रहिते पुन: कल्याणी दिस देखैत। तै काल कल्याणियोँ दुनू गोरे पाछू घुरि तकैत तँ जेलरपर नजैर पड़ैत।)

जेलर- *(दुनू हाथ जोड़ि)* अन्तिम विदाइ।

कल्याणी- *(मुस्की दैत)* अन्तिम विदाइ नै पहिल विदाइ। जाधैर अहाँक जहल रहत ताधैर एक नै हजरो बेर आएब।
(फाटक बन्न कऽ जेलर भीतर जाइत अछि। कल्याणी आ प्रतिज्ञा दू डेग आगू बढ़ि)

कल्याणी- अखैन धरि जहिना अहाँ कौलेजक एकटा छात्रा छी तहिना हमहूँ छी। मुदा आब तँ पढ़ाइक अन्तिममे समय छी। परीक्षो भइए गेल। रिजल्ट निकलत जिनगीक लीला शुरू हएत।

प्रतिज्ञा- जिनगियेक लीला किए कहै छी नवालिगक सीमा सेहो टपि गेलौं। जहिया जेल एलौं तहिया ने नवालिग छेलौं। जइसँ देश आ समाजक प्रति ने

कोनो अधिकार छेलए आ ने कोनो कर्तव्य। मुदा से तँ आब नै रहल। ओना बालबोधे जे किछु केलौं ओहो कोनो अधला थोड़े केलौं।

कल्याणी- अखैन धरि जे किछु भेल ओ बाल-बोधक खेल भेल। मुदा जहलक भीतर नवालिगक सीमा टपि वालिक भेलौं। 18 बर्ख पूरा भेल। जिनगी लेल आइ संकल्प ली जे जाधैर नारीपर अन्याए होइत रहत ताधैर चैनक साँस नै लेब।

प्रतिज्ञा- अखैन धरि ने अहाँकेँ ऐ रूपे हम चिन्है छेलौं आ ने अहाँ हमरा चिन्है छेलौं। तँए दुनू गोरे संकल्पक संग सप्पत ली जे जाधैर साँस रहत ताधैर संग-संग रहब।

कल्याणी- निश्चित। जे कियो ऐ धरतीपर जनम नेने अछि सभकेँ स्वतंत्र रूपे जीवैक अधिकार छे *(किछु काल चुप भऽ)* सृष्टिक शुरूहेसँ देखैत छी जे जहिना ऋृषि भेला तहिना ऋृषिका सेहो भेली। *(पुन: रूकि)* संग-संग जिनगी बितैबतौं पुरुख नारीक संग भीतरघात करैत-करैत सकपंज कऽ देलैन। जेकर परिणाम भेल जे ओकर पहाड़ सदृश रूप बनि गेल अछि।

प्रतिज्ञा- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ बनि गेल अछि। मुदा

जहिना रसे-रसे बंधन सक्कत होइत गेल तहिना रसे-रसे तोड़ौ पड़त। एक्के बेर जँ सभ बंधनकेँ तोड़ए चाहब से संभव नै छै।

कल्याणी- *(मुड़ी डोलबैत)* ई तँ अछि। मुदा दुनियाँमे एहेन कोनो काज नै अछि जेकरा मनुख नै कऽ सकैए। तहन ई बात जरूर अछि जे जे जेहेन काज रहत ओइ लेल ओइ तरहक शक्तिक जरूरैत पड़ैत। तँए जरूरी अछि जे जहिना अखैन हम दुनू गोरे मिलि संकल्प लेलौं तहिना आरोकेँ जोड़ि शक्तिक अनुकूल डेग उठाएब।

प्रतिज्ञा- हँ, से तँ कहलो गेल अछि जे "जमात करए करामात।" जेना-जेना दुर्ग टपैत जाएब तेना-तेना शक्तियो बढ़ैत जाएत। जहिना बुन-बुन पानि मिलि धरतीपर ससैर धारा बनि धारक आकार बना समुद्रक रूप ग्रहन करैत तहिना ने मनुखोक होइत।

❍❍ शब्द संख्या: 827

दोसर दृश्य-

(जहलक बाहरी छहरदेवाली टपि कल्याणी आ प्रतिज्ञा। दोसर दिससँ कल्याणीक भाए चन्द्रनाथ आ माए शान्तिकेँ देखैत तँ दोसर दिससँ शान्ति कल्याणीपर नजैर अटकौने। जेना शान्तिकेँ बघजर लगि गेल दुनू आँखिसँ नोर टघरैत। मुदा क ल्याणी आ प्रतिज्ञाक मुहसँ खिलैत माने फुलाइत फूल जकाँ हँसी निकलैत।)

कल्याणी- *(आगू बढ़ि)* माए, अहाँ कनै किए छी? बेटी कोनो अधला काज कऽ जहल नै आएल छल। *(कहैत दुनू हाथे दुनू पएर पकैड़)* अहाँ असिरवाद दिअ। जहिना समाजक आन माएसँ हटि अहाँ पढ़ैक छूट देलौं तहिना हमरो दायित्व होइत अछि जे समाजक कल्याणक दिशामे आगू बढ़ी। जाधैर परिवारक डेग आगू दिस नै बढ़त ताधैर समाज केना बनत?

(दुनू बाँहि पकैड़ शान्ति कल्याणीकेँ उठबैत। कल्याणी उठि कऽ माइक दुनू आँखिक नोर दुनू हाथसँ पोछि आँखिपर आँखि गरा आगूमे ठाढ़ि। शान्तिक आँखिसँ धरती, पहाड़, समुद्रक रूप

छिटकैत तँ कल्याणीक आँखिसँ सिंहक रूप छिटकैत)

चन्द्रनाथ- अहाँ सभ ताबे एतै अँटकू। एकटा सवारी नेने अबै छी। *(कहि भीतर जाइत)*

प्रतिज्ञा- चाची, आइ धरि नारी जगत, कमला-कोसीक धारक संग कारी मेघक बरखा सदृश अदौसँ नोर बहबैत आएल अछि मुदा जाधैर ओइ नोरकेँ बहैक कारणकेँ नै रोकल जाएत ताधैर बहब केना बन्न हएत? जहिना बेटी कल्याणी छी तहिना प्रतिज्ञो छी। असिरवाद दिअ।

शान्ति- *(माइक नजैरसँ नजैर मिला)* तूँ सभ जहल किए एलह?

कल्याणी- परीक्षाक आखिरी दिन एक्केटा विषयक परीक्षा रहै। जे दोसर खेपमे माने दोसर सत्रमे रहै। चारि बजे समाप्त भेल। ओना प्रश्न हल्लुके बुझि पड़ल। जहाँ सबाल पढ़लौं आकि मन हल्लुक भऽ गेल। नीक जकाँ लिखलौं। डेरा अबैत रही आकि रस्ता मे देखलिऐ...।

शान्ति- की देखलहक?

कल्याणी- आगू-पाछू विद्यार्थी (संगी) सभ डेरा अबैत रहै। हम दुनू गोरे (कल्याणी आ प्रतिज्ञा) पाछू रही। हमरासँ करीब चारि लग्गी आगू रूपा असगरे अबैत रहै। मोटर साइकिलपर एकटा युवक पाछूसँ जाइत रहै। रूपा लग आबि पहुँचते मोटर साइकिलेपर सँ देह परहक ओढ़नी खींचि लेलक।

(ओढ़नी खिंचैक सुनि शान्ति चौंकि गेलि। जेना बाँसक दू टुकड़ी रगड़सँ आगिक लुत्ती छिटकैत तहिना शान्तिक आँखिसँ लुत्ती छिटकल)

शान्ति- अँए, एते अन्याए?

प्रतिज्ञा- चाची, अहाँ गाम-घरमे रहै छी तँए नै देखै छिऐ। एहेन-एहेन अन्याए हजारक हजार रोज होइए।

शान्ति- राही-बटोही किछु ने कहै छै?

प्रतिज्ञा- की कहतै। निर्लज पुरुख नारीक लाज (इज्जत) थोड़े बुझैए। उ सभ तँ नारीकेँ खेलौना बनौने अछि। एक्के पुरुख अपन बहु-बेटीकेँ इज्जतक नजैरिये देखैए मुदा

दोसराकेँ रण्डी-बेश्या बुझैए।
(क्रोधसँ शान्ति थर-थर कँपए लगल। दुनू आँखि लाल भऽ गेलै)

शान्ति- तब की भेलै?

प्रतिज्ञा- वेचारी रूपा, आगू-पाछू ताकि, मुड़ी गोति आगू बढ़ैत गेल। मुदा हमरा दुनू गोरेकेँ नै देखल गेल। सड़कक कातेमे पीचक पजेबा उखड़ल रहै। दुनू गोरे पजेबा हाथमे लऽ दौग कऽ ओकरापर फेकलौं। एकटा तँ हूसि गेलै। मुदा दोसर कपारमे लगलै।

शान्ति- वाह-वाह, भगवान हमरो औरुदा तोरे सभकेँ देथुन। भाँइमे कियो दादा हुअए। नारी-जातिक सान बचेलौं। तेकर उत्तर की भेल?

प्रतिज्ञा- ओ मोटर साइकिलपर सँ खसि पड़ल। कपारसँ खून गड़-गड़ चुबए लगलै। हल्ला भेलै। तखने ट्रैफिक पुलिस आबि कऽ दुनू गोरेकेँ पकैड़ पहिने थाना लऽ गेल। थानासँ जहल पठा देलक।

शान्ति- मुदा हम तँ दोसरे-तेसरे बात सुनलौं।

प्रतिज्ञा- की?

शान्ति- केते बाजब कोइ किच्छो तँ कोइ किच्छो बजैए। एक गोरे कहलक जे दुनू गोरे परीक्षामे चोइर करैत पकड़ल गेल।

प्रतिज्ञा- चाची, झूठकेँ सत्य बनाएब आ सत्यकेँ झूठ बनाएब छुद्दर पुरुख सबहक गुण छी। जहिना बहिन कल्याणीक माए छिऐ तहिना हमरो छी अहाँ लग झूठ बाजब।

शान्ति- *(किछु मोन पाड़ैत)* बेटी प्रतिज्ञा, तूँ जे कहलह ओ अपनो मनमे अबैए। मुदा बिना पुरुखक मदैतिये नारी जीब केना सकैए?

कल्याणी- *(उत्साहित भऽ)* अखैन धरि नारीकेँ पुरुख अन्हारमे रखलक। जइसँ ओकरा अपन सभ गुण हरा गेलइ। घरक भीतर रखि ओकरा दुनियाँक बात बुझै नै देलक। जइसँ ओ परती खेत नहाँति सभ किछु रहितो पानि-बिहाड़ि, जाड़, रौद, भुमकमक चोटसँ निष्क्रिय भऽ गेल।

शान्ति- ऐ बातकेँ नारी किए ने अखैन धरि बुझि रहल अछि?

कल्याणी- एकरो कारण छै। सृष्टिक निर्माण पुरुख नारीक संयोगसँ होइत अछि। जहिना गाड़ी, दू पहियासँ चलैए, तहिना। मुदा नारीक पेटमे नअ मास रहि बच्चाक जनम होइत अछि। ऐ दौरमे नारीकेँ कठिन कष्टक सामना करए पड़ैए। जेकर लाभ पुरुख उठौलक।

शान्ति- *(मुड़ी डोलबैत)* हूँ...।

कल्याणी- बच्चाक पालन खाली पेटे धरि नै जनम लेला पछाइतो होइत अछि। जइमे घेरा जाइत अछि। घेराइत-घेराइत एते घेरा जाइत जे जिनगी बदैल गुलाम बनि जाइत अछि।

शान्ति- *(मुड़ी डोलबैत)* एहेन स्थितिमे नारी पुरुखक बरबैर केना कऽ सकैए?

प्रतिज्ञा- *(उत्तेजित भऽ)* कए सकैए, चाची।
(सवारी लऽ कऽ चन्द्रनाथक प्रवेश)

चन्द्रनाथ- चलै चलू। सवारी आबि गेल।❍❍

शब्द संख्या: 697

तेसर दृश्य-

(अनन्त कुमारक घर। दरबज्जापर एकटा चौकी राखल आ बगलमे कुरसीपर अनन्त कुमार बैसि, आँखि बन्न केने)

अनन्त कुमार- (स्वयं) दिनो-दिन जिनगी जपाल भेल जा रहल अछि। जे दिन जे क्षण बीत रहल अछि ओ नरकक वास भऽ रहल अछि। मुदा मऽरबो तँ हाथमे नहियेँ अछि अपने हाथे आत्महत्यो केना कए लेब?

(चाह नेने शान्तिक प्रवेश। पतिक हाथमे कप पकड़बैत शान्ति चौकी बगलमे ठाढ़। एक घोट चाह पीबि अनन्त कुमार शान्ति दिस देख)

अनन्त कुमार- जिनगी भार भऽ गेल। अकाजक अन्न सन देबकेँ हत्या करैत छी। नीरस जिनगी कोकनल गाछ सदृश होइत अछि। जे पील, गराड़क घर बनि जाइत अछि तहिना जिनगी बुझि पड़ैए।

शान्ति- सोग केलासँ सोग थोड़े मेटाएत। सोग तँ समस्याकेँ जनम दइए। जे बिना केने थोड़े मेटाएत?

अनन्त कुमार- जखने घरसँ निकलै छी तखने रंग-बिरंगक अड़कच-बथुआ काचर-कुचर सुनए लगै छी। केकरा की कहियौ। केते लोकसँ माथ चटाउ। केकरो मुँहमे जाबी लगौनाइ असान छी।

शान्ति- केते दिन मुड़ी गोंति समाजमे जीब?

अनन्त कुमार- नीक हएत जे झब दए कल्याणीक बिआह करा दिऐ। आन गाम गेलापर तँ लोकक बात नै सुनब। जहिना पोखैरक पानिक हिलकोर जे दू-चारि दिनमे शान्त भऽ जाइ छै तहिना असथिर भऽ जाएत।
(चन्द्रनाथक प्रवेश)

शान्ति- भने बउऔ आबिऐ गेल। दुनू बापूत छीहे विचारि कऽ रस्ता नकालि लिअ।

चन्द्रनाथ- *(अकचकाइत)* कथीक रस्ता माए? कोन एहेन दुर्ग टूटि कऽ खसि पड़ल जे बाबूकेँ हम विचार देबैन।

अनन्त कुमार- बौआ, नीक की बेजाए, अपना परिवारमे नै बाजब तँ केतए बाजब। जखने गाम दिस टहलै छी,

सोझहा-सोझही तँ नै मुदा अढ़ दाबि-दाबि मौगियो आ मरदो की बजैए तेकर कोनो ठेकान नै।

चन्द्रनाथ- की बजैए?

अनन्त कुमार- कियो बजैए जे कल्याणी जहल जा कुल-खनदानक नाक-कान कटौलक। तँ कियो बजैए जे केहेन माए-बाप छै जे बेटीक वएस बितल जाइ छै मुदा बिआह करैले नीने ने टुटै छै।

चन्द्रनाथ- बाबू, जहिना दिनक उनटा राति होइ-छै तहिना नीक अधलाक बीच सेहो होइ-छै ज्ञान-अज्ञानक बीच सेहो होइ छै। धरतीपर ओते अधलो अछि। हमरा बुझने तँ अधले बेसी अछि। किऐक तँ नीक एक्के तरहक होइ छै जखैन कि अधला अनेको रंगक-रावण-कौरबक सरवा जकाँ।

अनन्त कुमार- तेतबे नै ने, ईहो बजैए जे पढ़ा-लिखा कऽ बेटी तेहेन बना लेलक जे चौक-चौराह पुरुखे जकाँ मुँह-कान उधारि निधोख भाषणो करैए।

चन्द्रनाथ- बाबूजी, हमर बहिन कुम्हरक बतिया नै ने छी जे ओंगरी बतौने सड़ि जाएत। जँ कियो आँखि उठौत वा ओंगरी बतौत तँ ओकर आँखियो फोड़ि देबै आ

ओंगरियो काटि लेबै। अपन माए-बहिन दिस देखह जे माटिक मुरुत बनौने अछि।

शान्ति- बौआ, हम दुनू परानी तँ पाकल आम भेलौं जाबे जीबै छी, ताबे जीबै छी। कखनी खसि पड़ब तेकर कोन ठीक। मुदा तूँ दुनू भाए-बहिन तँ से नै छह। भगवान करथुन जे हँसैत-खेलैत शतायु हुअह।
(कल्याणीक प्रवेश)

अनन्त कुमार- बेटी कल्याणी, तोरा सभले ओइ गीरहकेँ तोड़ि देलौं जइ बंधनक बीच कन्या अज्ञानक काल-कोठरीमे जीबैए।

कल्याणी- बाबूजी, जहिना अहाँ समाजमे पहिल डेग उठा नव फुलक गाछ रोपलौं तहिना अहाँक आत्मा एक नै अनेक फुलक फुलवाड़ी लगौत।

शान्ति- बेटी, भगवान हमरो दुनू बेकतीक औरुदा तोरे दुनू भाए-बहिनकेँ देथुन। जाबे बच्चा छेलह ताबे जेतए धरि भऽ सकल सेवा केलिय। आब तँ तोरे सबहक दिन-दुनियाँ भेलह, हम सभ तँ चलचलाउ भेलौं।

कल्याणी- माए, नारीक संग अत्याचार करैत-करैत पुरुख एहेन अभ्यस्त भए गेल अछि जे उचित-अनुचितक सीमे

समाप्त भऽ गेल छै। जइसँ नारी खसैत-खसैत एते निच्चाँ खसि पड़ल अछि जे स्वरूपे समाप्त भऽ गेल अछि।

अनन्त कुमार- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ भऽ गेल अछि।

कल्याणी- बाबू, ई दुनियाँ कर्मभूमि छी "वीर भोग्या बसुंधरा" जे जेहेन कर्म करत ओ ओहन फल पौत। जहिना डोरीक एक भत्ता अहाँ तोड़ि हमरा अन्हारसँ इजोतक रस्ता खोललौं। तहिना एक-एक भत्ता तोड़ि नारी जगतक बन्धन तोड़ि देबै।

अनन्त कुमार- बंधन तँ सक्कत अछि मुदा ओकरा तोड़नौं बिना तँ कल्याण नहियेँ अछि। मुदा ऐ लेल ज्ञान, साहस आ धैर्यक जरूरैत अछि।

कल्याणी- *(मुस्की दैत)* पैरुख सिरिफ पुरुखे लेल नै नारियो लेल विधाता देने छथिन। जरूरैत अछि ओकरा पकड़ैक। हमहूँ आब नवालिग नै बालिक भेलौं तेतबे नहि, किरिणक डोरसँ सुनि सेहो देखि लेलौं। जहिना सृष्टिक विकासमे पुरुख-नारी समान अछि तहिना जाधैर दुनूक बीच समानता नै आओत ताधैर चैनक साँस नै लेब

अनन्त कुमार- बहुत कष्ट हएत?

कल्याणी- *(हँसैत)* “जीवन नया मिलेगा, अन्तिम चिता में जल के”। जहिना भिनसुरका सुरूज देखने दिनक अनुमान होइए तहिना तँ नवालिगक आड़ि हमहूँ जहलेमे टपलौं किने।❍❍

शब्द संख्या: 683

चारिम दृश्य-

(दरबज्जाक चौकीपर चद्दैर ओढ़ि, मुँह उधारने अनन्त कुमार पड़ल। पँजरामे शान्ति बैसल)

शान्ति- *(देह छुबि)* बोखारसँ देह जरैए आ अहाँ जिद्द बन्हने छी जे दरबज्जापर सँ अँगना नै जाएब।

अनन्त कुमार- आइ धरि परिवार अँगने भरि रहल मुदा कल्याणी सन बेटी कुलमे जनम लेलक। जे आँगनसँ निकैल समाज रूपी परिवारमे रहए चाहैए, बाप होइक नाते हम दरबज्जो धरि नै अरिआति देबै।

शान्ति- कहलौं तँ ठीके मुदा माए-बाप, बेटा-बेटीकेँ जनमे ने दइ छै करम तँ अपने काज करै छै।

अनन्त कुमार- हमरा ऐ परिवारक कोनो भार नै अछि जहिना बाबू दरबज्जा बना कए गेला तहिना अन्तिम साँस धरि दरबज्जाक रक्षा माने मान-सम्मान करैत रहब। *(चन्द्रनाथक प्रवेश)*

चन्द्रनाथ- *(अवितहि)* बाबू किए, चद्दैर ओढ़ने छिऐ?

शान्ति- बोखारसँ आगि फेकै छैन। केतबो कहै छिऐन जे पुरबा लहकै छै, चलू आँगन, से कहै छैथ जे अन्तिम समैमे दरबज्जापर प्राण छोड़ब। पुरबा-पछबाक काज छिऐ। बहनाइ, बहऽ।

चन्द्रनाथ- बाबू, जे बात अहाँ आइ बजलौं से पहिने कहाँ कहियो बाजल छेलौं।

अनन्त कुमार- तोहर प्रश्नसँ हृदए जुड़ा गेल बौआ। माए छथुन तँ फुटल ढोल। भरि दिन पनचैती केने घुरती जे सभ शान्तिसँ मिलि-जुलि कऽ रहू। मुदा जहिना शक्ति बढ़ल जाइए तहिना हिनकर पनचैतियो बढ़ल जाइ छैन।

चन्द्रनाथ- *(ठहाका मारि)* हूँ-हूँ...।

शान्ति- बुढ़ा तँ नीक-अधला सभ दिन कहलैन। जखैन-जुआन रही तखैन बरदास भेल आ आब तामस उठत। दुनियाँमे जँ कियो संग पुरलैन तँ सभसँ बेसी यएह ने पुरलैन। मुदा आब भगवान अन्याए केलैन जे पहिने हमरा नै ओछाइन छड़ौलैन।

अनन्त कुमार- नीक हेतह जे कल्याणियोँ कैँ सोर पाड़ि लहक। *(चन्द्रनाथ भीतर प्रवेश। कल्याणीक संग मंचपर प्रवेश।)*

कल्याणी- बाबू, किछु होइए?

अनन्त कुमार- नै।

शान्ति- की कहथुन। बोखारसँ देह जड़कै छैन।

कल्याणी- कोनो दबाइ नै देलहुन?

अनन्त कुमार- दबाइ खाइबला रोग नै छी बेटी। मनमे एते खुशी आबि गेल अछि जे सौंसे देह हँसैए।

कल्याणी- *(मने-मन सोचैत। मुँहक पोज सुख-दुखक यएह अवस्था छी)* माए किछु कहै छैथ अहाँ किछु कहै छी? *(आवेशमे अबैत)* किए बजेलौं?

अनन्त कुमार- केतए गेल छेलह?

कल्याणी- महिलाक एकटा बैसारक आयोजन करए चाहै छी जइमे विधवा समस्याक सम्बन्धमे विचार करब।

अनन्त कुमार- ई तँ छोट समस्या छह। अखैन नव उत्साह छह पैघ समस्याकेँ नजैरमे रखि डेग उठाबह।

कल्याणी- *(विस्मित होइत)* केना ऐ समस्याकेँ छोट समस्या कहै छिऐ।

अनन्त कुमार- भने तँ समाज दिस डेग उठेबे केलह, बुझवे करबहक। मुदा पहिने समाजकेँ पढ़ए पड़तह। *(उठि कऽ बैसैत)* चद्दैर उतारि सिरमापर रखि दुनू पएर मोड़ि कए बैसैत सभ कियो एकठाम बैसह।

(चारू गोरे चौकीपर बैस जाइए।)

अनन्त कुमार- सभकेँ अपन परिवारमे, एक सीमा धरि लाज-विचार करक चाही माइए छथुन पहिने हिनका विषएमे सुनि लाए।

(पतिक बात सुनि शान्ति देह-हाथ समेट सांकांक्ष होइत बैसैत। चन्द्रनाथ मुड़ी गोति लेलक। कल्याणी पिताक आँखिपर आँखि गड़ा लेलक।)

अनन्त कुमार- जहियासँ माए एलखुन तहियासँ जिनगीक अन्तिम पड़ाव धरि संगे छी। गुण-अवगुण मनुखमे होइते अछि। मुदा सदैतकाल दुनूपर नजैर रखि गुणकेँ

बढ़ेबाक आ अवगुणकेँ कम करबाक कोशीस करक चाही। जइसँ नीक रस्ता पकैड़ आगू बढ़ब।

कल्याणी- ई तँ बड़ कठिन काज छी, बाबू।

अनन्त कुमार- *(मुस्की दैत)* हँ, ई विवेकक काज छी। अही दुआरे मनुख सभ जीवसँ ऊपर भेल। ओना ऊपर होइक दोसरो कारण ई अछि जे धरतीपर जेते जीव-जन्तु अछि तैमे मनुख अन्तिम रूप छी।

कल्याणी- माइक चरचा करए लगलिऐ?

अनन्त कुमार- हँ। देखहक, ऐ धरतीपर अनेको लोक अछि। जेकर सीमा निर्धारित कर्म आ ज्ञान केने अछि। ऐ अर्थमे माए बहुत दूर छथुन। मुदा अहू अवस्थामे आत्मा , माने विवेक सएह कहैए जे अखनो धरि दोसराक पैतपाल करबाक शक्ति छैन।

चन्द्रनाथ- *(मुड़ी उठा)* एते दिन किए..?

अनन्त कुमार- हँ, ठीके तूँ पूछए चाहै छह। जहिना माली, बिना फूलक बीआ देखनौं पात देख, बुझि जाइए जे ई

अमुक फूलक गाछ छी। तहिना कल्याणीकेँ देखि विवेक जगि गेल।

चन्द्रनाथ- एते दिन विवेक सूतल छेलै?

अनन्त कुमार- नै बौआ, जहिना आमक गाछक जड़िमे जनमल तुलसी गाछक बाढ़ि ठमैक जाइए तहिना ठमैक गेल छेलइ। मुदा कल्याणीक आँखिक ज्योति जहिना सुनयनाक बेटी सीताक छेलैन तहिना बुझि पड़ैए। तँए अनासुरती विवेक पोनगि गेल।

कल्याणी- माए, बाबूक संग अहूँ असिरवाद दिअ।

शान्ति- अखैन धरि जे डीह, पुरखाक कएल काजक इतिहास छी ओकरा जीबित दुनू भाए- बहिन मिलि रखब।

कल्याणी- झाँपल-तोपल बात अहाँक नै बुझि सकलौं।

शान्ति- हम तँ बेसी बिसैरिये गेलौं। बाबूए कहथुन।

अनन्त कुमार- बेटी कल्याणी, पहिने परिवार बुझि लहक। तूँ दुनू भाए-बहिन छह। जहिना तूँ घरसँ निकैल दोसर घर

जेबह तहिना दोसरा घरसँ अपनो घर औती। ऐसँ मनुखक स्थानान्तर (ट्रान्जेक्शन) शुरू भेल। ओना अपनो परिवारमे लड़का-लड़की होइत (जनम) अछि, किए दोसर परिवारसँ सम्बन्ध जोड़ल जाइए?

(चन्द्रनाथ बहिन दिस हाथ बढ़ौलक, कल्याणी भाइक हाथमे हाथ रखलक। माटिक मूर्ति जकाँ अनन्त कुमार देखैत। अपने मने शान्ति बरबराए लगली)

शान्ति- सासु-ससुरक बनौल परिवारकेँ अखैन धरि निमाहि रहल छी। जहिना बूढ़ा दुआरपर आएल अभ्या गतकेँ बिना हँसौने नै जाइ दइ छेलखिन तहिना अखैन धरि निमाहल।

कल्याणी- ई तँ काजक भार भेल, माए। मुदा असिरवादो ने चाही?

शान्ति- बेटी, सामाक माए-बाप जकाँ, तोहर माए-बाप नै छथुन। जहिना सामा लेल चकेबा सभ किछु तियागि संग पुरलक तहिना तोरो भाए करथुन।

(चन्द्रनाथकेँ भारसँ दबैत देखि अनन्त कुमार)

अनन्त कुमार- हँ, कहै छेलिअ। जहिना शंकर बीज उन्नतिशील होइत तहिना मनुखोक प्रक्रिया अछि। (बात

बदलैत) सदैतकाल माए माथ खोड़ैत रहै छथुन जे किए बेटीक (कल्याणीक) बिआह अनठौने छी। मुदा हम अनठौने कहाँ छी।

कल्याणी- *(आँखि लाल केने)* बाबू...।

अनन्त कुमार- *(मुस्कियाइत)* बेटी हुनको विचार अधला नहियेँ छैन। बेटीक प्रति माइक ममता बेसी होइ छै। मुदा परिवारमे बिआह साधारण काज नै छी। तहूमे अखैन, सभ तरहक संक्रमणक प्रक्रिया चलि रहल अछि।

चन्द्रनाथ- की संक्रमण?

अनन्त कुमार- पहिने अपन इतिहास बुझि लाए। अदौमे स्वयंवर प्रथाक चलैन छल। जहिक माध्यमसँ माए-बाप बेटा-बेटीकेँ भार दऽ देलकैन। मुदा आइ की देखै छहक जे तेते ओझरी लगि गेल जे जेते सोझरबैक रस्ता अपनौल जाइए ओते ओझरी बेसियाइए जाइ छै।

कल्याणी- बाबू, हमहूँ अबोध बच्चा नै छी बालिग भेलौं। तँए...।

अनन्त कुमार- बिल्कुल ठीक सोचै छह। जखैन महिलामे पैंतालीस-पचास बर्ख धरि सन्तान उत्पन्न करबाक शक्ति रहैए तखैन कम उमरमे बिआह तँ बड़ जरूरी नहियेँ भेल?

कल्याणी- असिरवाद दिअ। समाजक बीच किछु करबाक जिज्ञासा भऽ गेल अछि।

अनन्त कुमार- बेटी, हृदेसँ असिरवाद दइ छिअ। जहिना अदौमे कोनो अछूत जाति जखैन कोनो गाममे प्रवेश करै छल तखैन कोनो एहेन बाजा बजबै छल जे लोक बुझि जाइ छेलइ।

कल्याणी- *(चकोना होइत)* की कहि देलिऐ?

अनन्त कुमार- पुरना गप कहलिअ। आब तँ गीताक जुग एलै। तँए जहिना कृष्ण कुरुक्षेत्रमे शंखक अवाजसँ अपन जानकारी दइ छेलखिन। तहिना...।

कल्याणी- *(आँखि-कान चकोना करैत चारू भाग देख)* कनी बुझा कऽ कहियौ?

अनन्त कुमार- समाजमे किछु करए चाहै छह तँ काल्हिये बेरू पहर दुर्गास्थानमे बैसार करह।

कल्याणी- काल्हिसँ नीक जे रवि दिन बैसार करब नीक रहत। ओइमे नोकरियो-चाकरियो सभ रहता।

अनन्त कुमार- नोकरी-चाकरी कए कऽ जे गामक नास केलक ओकरा बुते गाम बनौल हएत। जहिना भिनसुरके सुरूज देखलासँ दिन भरिक अनुमान लोक कऽ लइए तहिना मनुखक किरदानीए देखि कऽ मनुखकेँ चिन्हए पड़तह।

कल्याणी- हुनका बुते केना गामक विचार कएल हेतैन।

अनन्त कुमार- *(खिसिया कऽ)* दिल्ली सरकारमे सभसँ बेसी बिहारक रेलमंत्री भेला। मुदा की देखै छहक? जेकरा तूँ अबोध कहै छहक ओकर जिनगियो छोट छै। जिनगीक समस्यो कम होइत अछि।

कल्याणी- अखने जा कऽ ढोलियाकेँ ढोलहो दइले कहि अबै छिऐन। साँझू पहर ढोलहो दऽ देब। ❍❍

शब्द संख्या: 1140

पाँचम दृश्य-

(दुर्गास्थानक आगूमे एक भाग पुरुख एक भाग महिला बैसल। एकटा डायरी, पेन नेने महिला दिससँ आगूमे कल्याणी-प्रतिज्ञा। पुरुख दिससँ सूर्यदेव, क्षितिजदेव, निष्कान्त बैसल।)

सूर्यदेव- आजुक बैसार लेल कल्याणी आ प्रतिज्ञाकेँ हृदेसँ शुभकामना दइ छिऐन जे एकटा नव परम्पराक शुभारम्भ केलैन। आशा संग आगू बढ़ति सएह शुभकामना।

कल्याणी- भाय साहैब, अहाँ सभ तरहेँ अगुआएल छी तँए आगूक बाटक जेते ज्ञान अहाँकेँ अछि ओते हम थोड़े बुझै छी।
(बिच्चेमे निष्कान्त)

निष्कान्त- सुरजू भाय, हमरो बात सुनि लिअ। काल्हिये दुनू परानीक झगड़ाक पनिचैतीमे गेल छेलौं। वेचारा विसनाथकेँ देखिते छिऐ जे डेढ़ सौ रुपैआक कमाइ घर जोड़ैयामे करैए। सभ दिन कमा कऽ अबैए आ

घरवालीक हाथमे दऽ दइ छै। घरवाली केहेन जे टी.भी. कीनैले पाइ जमा करैत जाइए। रौद-बसातमे काज करैबलाकेँ एकटा गंजीसँ थोड़े पार लगतै। तइले घरवाली पाइए ने दइए।

कल्याणी- *(मुड़ी डोलबैत)* की पनचैती केलिऐ?

निष्कान्त- सँए-बहुक झगड़ा पंच लबरा। हम नै बुझै छिऐ जे पावरक लड़ाइ छी। दुनू गोरेकेँ थोड़-थाम लगा देलिऐ। दू विचारक लड़ाइ हमरे बाप बुते फड़ियाएल हएत।

सूर्यदेव- अच्छा एकटा कहऽ जे दुनू गोरेमे घरक गारजन के छी?

निष्कान्त - उँ-हूँ सौंसे गामेमे सबहक घरमे मौगियेक जुति अछि। एहेन जे लोकक दशा भेल छै से किए? कमाइ छै कोइ, हुकुम केकरो। कोनो घर आकि कोनो गाम, जाबे मरदक जुतिमे नै चलत ताबे ओहिना गाम आगू मुहेँ ससैर जाएत?

कल्याणी- कबिलाहाक खेल देखबै। दिन पनरहम गुरुकाका कानि-कानि कहैत रहैथ जे सभ दिन परदा-पौसकेँ

मानलौं। पुतोहुजनीकेँ बेटा नोकरी लगा देलकैन । दस कोसपर स्कूल छैन। दुनू परानी जे जेतए छैथ, खाइ-पीबै राति धरि घूमि कऽ अबै छैथ। बेटा तँ बेटा भेल मुदा पुतोहुक सेवा सासु करैन, ई हमरा पसिन नै अछि?

सूर्यदेव- ई नै पुछलहुन जे समय एना किए भेल?

निष्कान्त- आठ घन्टा खटनीक पछाइत जे समय बँचैए तेतबे ने समाजमे समय लगाएब ओते जे पुच्छा-पुच्छी करैए लगब, से ओते निचेन रहै छी।

कल्याणी- भैया, नारीकेँ बरबैर अधिकारक हवा चलि रहल अछि से की?

सूर्यदेव- मदारी सबहक खेल छी। नारी, पुरुखसँ हीन केना बनैत गेल? जाधैर ऐ इतिहासकेँ नै देखब ताधैर कारण केना पाएब। केकरोसँ अधिकार मंगबै? ऐ लेल विकासक प्रक्रियाकेँ नीक जकाँ बुझए पड़त

कल्याणी- काज केना शुरू कएल जाए, भाय।

सूर्यदेव- बहुत बातक जरूरैत अखैन नै अछि। मुदा किछु बात कहि दैत छी। पहिल, नारीकेँ चिन्हैले नजैर ओतए दिअए पड़त जैठाम हवाइ जहाजमे उड़ैत, इलाइची फोड़ि-फोड़ि मुँहमे दैत जिनगी अछि तँ दोसर दिस भरि-भरि छाती पानि टपि (खच्चा, धार) भीजल कपड़ा पहीरि गोबर बिछैक जिनगी अछि।

कल्याणी- *(नमहर साँस छोड़ैत)* अद्भुत बात भाय अहाँ कहलौं।

सूर्यदेव- कल्याणी, अहाँ अखैन फुलाइत फुलक कली छी। तँए जरूरैत अछि शुद्ध माटि-पानिक। प्रत्येक साल समाजमे माने गाममे साएसँ ऊपर आन गामक बेटी अबै छैथ। गामक बेटी जेबो करै छैथ। प्रश्न उठैत सिरिफ देहेटा अबैत-जाइत आकि लूरि-बुधि सेहो अबैत जाइत अछि।

कल्याणी- अखैन तँ आरो विकट भऽ गेल अछि जे देशक एक कोनसँ दोसर कोनमे रहनिहारक (पालल-पोसल) बीच सम्बन्ध स्थापित रहल। जइसँ खान-पान, बात-विचार लूरि-ढंग सभ टकरा रहल अछि।

सूर्यदेव- अहिना खाइ-पीबैमे देखियौ। एक आदमीक (परिवारक) एक दिनक खर्च जेते होइत अछि दोसर

दिस ओहन परिवारक भरमार अछि जइ परिवारमे दसो-बर्खक आमदनी ओते नै छै। केकरो असली नोर चुबै तब ने से तँ पियौजक झाँसक नोर चुबबैए।

कल्याणी- खेती-बाड़ीक की स्थिति अछि?

सूर्यदेव- सरकारी मेला लगल। गाममे चारिटा ट्रेक्टर चलि आएल। एक तँ बाढ़िमे बारह आना बरद गाममे मरि गेल, दोसर जे चारि आना बँचल ओहो सभ गोबर उठबै दुआरे बेचि लेलैन । अखैन गाममे एक्कोटा बरद नै अछि। ले बलैया ट्रेक्टर कदबामे सकबे ने करै छै। खेती कोनो हएत?

कल्याणी- अजीव-अजीव बात सभ कहै छी, भैया?

सूर्यदेव- केते कहब बहिन। जेते खर्चमे पहिने लोक प्रोफेसर बनै छला तेते अखैन बच्चाक स्कूलमे खर्च हुअ लगल अछि। केकर बेटा पढ़त। शिक्षा केहेन भऽ गेल अछि धोती-कुरताबला आ पेन्ट-कोटबला अपनामे रगड़ केने छैथ जे हम नीक तँ हम नीक। के फड़ियौत? जखैन कि प्रश्न नान्हिटा अछि जे जइसँ जिनगी नीक-नहाँति आगू मुहेँ समैयक संग ससरै।

समाप्त।

शब्द संख्या: 622

समझौता

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र-

श्याम-	(इंजीनियर)
सुकान्त-	(इंजीनियर)
फुलेसर-	(मध्यम किसान)
कुसेसर-	(बँटेदार)
मुनेसर-	(बँटेदार)
रौदी-	(बँटेदार)
अनुप-	(बँटेदार)
झोली-	(बँटेदार)

स्त्री पात्र-

रूपनी-	(कुसेसरक पत्नी)
रेखा-	(श्यामक पत्नी)

पहिल दृश्य-

(कुसेसरक आँगन)

रूपनी- कोन लोभमे लटकल छी। गाममे देखै छी जे जेकरो ने किछु छेलै ओहो सभ पजेबाक घर बना लेलक। कल गड़ा लेलक। नीक-निकुत खाइए। चिक्कन-चिक्कन कपड़ा पहिरैए। अहाँ गाम-गामक रट लगौने छी।

कुसेसर- कहलौं तँ ठीके मुदा गामक लूरि छोड़ि लूरि कोन अछि जे शहर बजार जा करब। ने गाड़ी चलबैक लूरि अछि आ ने करखानाक काजक। तखैन जा कऽ की करब। खर्चा कऽ कऽ जाएब आ बूलि-टहैल कऽ चलि आएब। तखैन तँ आरो कर्जा लदा जाएत।

रूपनी- लूरि की कोनो लोक पेटेसँ सीख कऽ अबैए। काज करैत-करैत लूरि होइ छै। सुखदेवाकेँ कोन लूरि छेलइ। ढहलेल-बकलेल जकाँ गाममे रहै छेलइ। मति बदललै, ममियौत भाए सेने कलकत्ता गेल।

कुसेसर- सुनै छी जे आब कलकत्तामे नै रहैए। गाम ऐबो कएल तँ भेँटे ने भेल।

रूपनी- अहाँकेँ ने नै भेँट भेल। हम तँ भेँट केलिऐ। अँगनामे कुरसीपर चाह पिबैत रहए। जखने देखलक आकि कुरसीएपर चाहक कप रखि आबि कऽ दुनू हाथे पकैड़ दोसर कुरसीपर बैसैले कहलक।

कुसेसर- *(मुस्की दैत)* तब तँ अहाँ बड़का लोक भऽ गेलौं?

रूपनी- से की कुरसीपर बैसलौं। ओसारपर शतरंजी ओछाएल रहै ओइपर बैसलौं। मुदा धैनवाद ओकरा दुनू परानीक विचारकेँ दिऐ। अपने (हमरे) लगमे बैस चाहो-पीबै आ रूदपुरवालीकेँ चाह-बिस्कुट नेने अबैले कहलक।

कुसेसर- की सभ गप भेल?

रूपनी- कोनो कि एक्केटा गप भेल। अपने खिस्सा सभ कहए लगल।

कुसेसर- अखैन केते कमाइए?

रूपनी- तेकर ठेकान छै। कहलक जे मालिक तेते बिसवास करैए। करखानाक मनेजरी दऽ देने अछि। ओइठीनक एक रुपैआ अपना सबहक सत्तरि रुपैआ

होइ छै। मिहनतो करैए तँ सुखो होइ छै। अपना सभ जकाँ थोड़े अछि जे पेट साधि खटू आ सुखक बेरमे टुटरुमटुम।

कुसेसर- की करबै। ओकरा भागमे वएह लिखल छै अपना सबहक भागमे यएह लिखल अछि।

रूपनी- केकरो भाग-तकदीरमे किछु लिखल रहै छै। जँ से रहितै तँ धनक ढेरी रहै छै आ बेटा हेबे ने करै छै। जँ लिखल रहितै तँ सभ किछु ओकरे होइतै।

कुसेसर- तब की करब?

रूपनी- इंजीनियर (श्याम) साहैबकेँ समाद दऽ दियौन जे हम खेत-तेत नै करब। हुनकर कि कोनो खेत दहा जाइ छैन आकि रौदीमे जरि जाइ छैन। जजात जरैए आ दहाइए बँटेदारक। ऋृण पैंच लऽ कऽ खेती करू आ उपजाक कोन बात जे लगतो चलि जाइए।

कुसेसर- कहलौं तँ ठीके मुदा...।

रूपनी- मुदा-तुदा किछो ने। नै समाद पठेबैन तँ नै पठबियौन। मुदा खेतक आड़िपर जाएब छोड़ि

दियौ। जोत-कोड़ छोड़ि दियौ। जखैन गाम औता आ पुछता तँ कहि देबैन।

कुसेसर- आशा तँ वएह खेत अछि?

रूपनी- की अछि? ओते महगक खाद कीनै छी, बीआ कीनै छी, खटै छी। तैपर अदहा बाँटि दइ छिऐन। की लाभ होइए। दूध महक डारही होइए। खटनी कम लगै छै। ओते जे बोइनपर खटब तँ ओइसँ बेसी हएत।

कुसेसर- एकठाम दस सेर भऽ जाइए। बोइनो करब से सभ दिन काजो थोड़े लगैए?

रूपनी- अपनो काज ठाढ़ कऽ लेब। जइ दिन बोइन नै लागत तै दिन अपने काज करब।

कुसेसर- से केना हएत। जँ माले पोसब तँ सभ दिन ने ओकरा चरबए-बझबए पड़त। घास-भूसा करए पड़त। जइ दिन काज करए जाएब तै दिन अपन काज केना चलत।

रूपनी- तँ की गोला-बरदक सेबनेसँ, जीब?

(मुनेसरक प्रवेश)

मुनेसर- कुसेसर, हौ कुसेसर।

कुसेसर- हँ, हँ भैया, अबै छी।

मुनेसर- सोहराइवाली किए रँगल छथुन्ह?
(कुसेसर छुप्पे रहैत)

रूपनी- भैया, हम की कोनो अधला बात बजै छी?

कुसेसर- हँ भैया, अपनो मन करवनो-करवनो मानि लइए।

मुनेसर- से की?

कुसेसर- सोहराइए वालीक सुइत (हँसुली) बन्हकी लगा कऽ खेती केने छेलौं। देखिते छहक जे अपना बड़दो नै अछि। हरो जनेपर लइ छी। तैपर सँ खटवो करै छी आ पूजियो लगैए। रौदी भऽ गेल। एक्को कनमाक आशा रहल।

रूपनी- *(तरंगि कऽ)* हिनका जे कहबैन भैया से की हिनका नै होइ छैन। जेहने बँटेदार हम तेहने तँ ईहो छैथ।

मुनेसर- कहलौं तँ एक-लाखक बात मुदा की उपए?

रूपनी- छै उपए भैया?

मुनेसर- की?

रूपनी- इंजीनियर साहैबक खेत छिऐन। दहाउ आकि रौदीयाउ हुनकर खेत थोड़े चलि जेतैन। मुदा हमरा सबहक तँ लगता चलि जाइए।

मुनेसर- कनियाँ, दू सेरक अशो तँ अछि।

रूपनी- एहेन आशाकेँ मुँह मारौथ। अना जे चुपेचाप खेत छोड़ि देथिन तँ दोखी हेता। हुनका गाम बजा कऽ सभ बात कहबैन। कहाँदन बड़का हाकिम छथिन। बुझता तँ बड़ बढ़ियाँ नै तँ हम सभ बिना पूजीए काहि काटब ओ अछैते पूजीए काहि कटता।

मुनेसर- कुसेसर, कनियाँक विचार हमरो जँचैए। दुनू गोटे बुथपर चल। मिलिये कऽ कहबैन।❍❍

शब्द संख्या: 682

दोसर दृश्य-

(श्याम इंजीनियरक डेरा)

श्याम- *(चाह पिबैत)* कल्हुके टिकट अछि। दस बजे गाड़ी अछि। तँए सभ किछु सम्हारि लिअ।

रेखा- *(तमसाइत)* की सम्हारब आ की नै सम्हारब। हजारो दिन कहलौं जे गामक खेत बेचि लिअ, तँ जी गारल अछि।

श्याम- कोनो कि खगैए जे बेचि कऽ गुजर करब। बाप-पुरखाक अरजल छिऐन, जाधैर रहतैन ताधैर ने लोक नाम लेतैन जे फल्लांक छिऐन। तेतबे नहि, अपन लगिते की अछि मुदा साल भरिक बुतात (चाउर-दालि) तँ चलिते अछि।

रेखा- भरि दिन तँ हिसाबे जोड़ै छी कनी जोड़ि कऽ देखलिऐ जे केते पूजीसँ केते आमदनी होइए।

श्याम- सभठाम हिसाबे जोड़ने थोड़े काज होइए। इलाकाक-इलाकामे रौदी भऽ जाइ छै, दहार भऽ

जाइ छै। अरबो-खरबोक पूजीसँ एक्को-पाइ आमदनी नै होइ छै, से लोक बरदास करिते छैथ आ हम...।

रेखा- जिनका दोसर रस्ता नै छैन ओ कि करता। मुदा अपना तँ अछि।

श्याम- मिथिलाकेँ दुनियाँ देवलोक बुझैए। तैठाम हम छोड़ि कऽ पड़ा जाउँ।

रेखा- हमर बात कहिया सुनलौं जे आइ सुनब।

श्याम- कहिया नै सुनलौं?

रेखा- कहिया सुनलौं?

श्याम- जँ नै सुनलौं तँ आन दिन कहाँ कहियो ई बात कहलौं।

(सुकान्तक प्रवेश)

सुकान्त- भजार छी यौ?

श्याम- हँ, हँ भजार, आउ-आउ। बहुत दिन अहाँ जीब?

सुकान्त- विचारे कऽ रहल छेलौं जे अहाँसँ भेँट करी। का ल्हि गाम जाएब।

श्याम- किए?

सुकान्त- बँटेदार सभ अबैले कहलक अछि।

रेखा- कहै छिऐन जे कोन लपौड़ीमे पड़ल छी। गामक सभ खेत बेचि कऽ अहीठाम मकान बना लिअ। पूजी ने पूजी बनबैए। जेते सम्पति गाममे अछि ओ जँ ऐठाम आनि चलाएब तँ ओहिसँ केते बर आमदनी हएत। *(रेखाक बात सुनि सुकान्त मुड़ी डोलबैत। मुदा किछु बजैत नै।)*

श्याम- भजार, गुम्म किए छी?

सुकान्त- ई प्रश्न अपनो संग उठल अछि। मुदा..?

श्याम- मुदा की?

सुकान्त- जे बात कहि रहल छैथ ओ अपनो छल। मुदा रूकि गेलौं।

श्याम- रूकि किए गेलौं?

सुकान्त ठीके कहब छै जे जेते लोक तेते विचार। मुदा नीक अधलाक विचार तँ करै पड़त।

श्याम- समाजक पढ़ल-लिखल (वुधिजीवी वर्ग) लोक तँ अपने सभ छी, अगर अपने सभ आँखि मूनि काज करब तँ जे कम पढ़ल-लिखल वा नै पढ़ल अछि ओ की करत? तँए ने अहाँसँ पुछैक प्रयोजन।

सुकान्त- की करब अहाँ से तँ हमरा कहने नै करब। मुदा अपन कएल काज कहै छी।

श्याम- हँ, सएह कहू।

सुकान्त- पत्नी लग बजलौं जे गामक खेत बेचि एतै आ नि खेत कीनि घर बना भाड़ापर लगा देब। कोनो कारोबार जे करए जाएब से तँ नै भऽ सकैए। नोकरियोक ड्यूटी एहेन अछि जे चूर-चूर भऽ जाइ छी।

श्याम- की केलौं?

सुकान्त- पत्नी कहलैन जे खेत-पथार अहाँक कीनल तँ नै छी तखैन बेचब किए। स्त्रीगणक सोभाब हम बुझै छी।

अखैन भलेँ बेचि कऽ लऽ आनू मुदा जे स्त्रीगणक गाममे आब औती ओ की बजती?

रेखा- की बाजत? केकरो बजने की हेतै?

श्याम- की बजती?

सुकान्त- अपने नै बुझै छेलौं मदुा पत्नी कहलैन जे किछुए दिनक पछाइत घराड़ी घराड़ीए रहत से बात नै। बाड़ी-चौमास भऽ जाएत। जे कीनत ओ भट्टा उपजौत की परती बनाएत तेकर कोनो ठीक छै।

श्याम- हँ, से तँ नहियेँ छै।

सुकान्त- केकरो कियो मुँहमे ताला लगौत। बाजत जे कुकर्मीक घराड़ी छिऐ तँए नढ़ियो भुकै छै वा भट्टा उपजौल जाइ छै।

श्याम- *(नमहर साँस छोड़ैत)* फेर की केलिऐ?

सुकान्त- मन औना गेल। पुछलयैन तँ कहलैन जे पनरहो बीघा जमीन गौआँक बीच दऽ दियौन। ओ सभ अदैल-बदैल एकठाम कऽ हाइ स्कूल बना लेता।

अहाँ तँ नोकरी करिते छी। जाधैर जीब ताधैर भार तँ सरकार नेनहि अछि।

श्याम- अहाँक काज हमरो जँचैए।

रेखा- कौआसँ खैर लुटाएब कोन कबिलती भेल?

सुकान्त- एक्के काजकेँ लोक, अपन-अपन विचारे केते रंगक बुझैए। अपन कएल काज कहलौं। अहाँकेँ मीठ लगए वा तीत ई तँ अहाँक जिह्वा कहत।

रेखा- जिह्वा तँ सबहक एक्के रंग होइ छै?

सुकान्त- देखैमे भलेँ एक रंग होइ मुदा सुआद फुट-फुट होइ छै। जँ से नै होइतै तँ सभकेँ सभ चीज एक्के रंग लगितै।❍❍

शब्द संख्या: 610

अन्तिम दृश्य-

(गाम। कुसेसर, मुनेसर, फुलेदेब, श्याम आ तीन-चारिटा आरो बँटेदार)

फुलेसर- श्याम भाय, गाममे हमरा सभकेँ जीब कठिन भऽ गेल अछि। हरीयरी अहाँ सभकेँ अछि।

श्याम- नोकरीमे की कोनो लज्जति रहल। समय छल जखैन लोक हकिमानी करै छल आ अपना जकाँ खाइ छल। आब तँ निच्चाँ-ऊपर मालिके-मालिक।

फुलेसर- *(हँसैत)* एहेन उटपटाँग बात किए कहलौं?

श्याम- सिरिफ दरमाहापर आश्रित छी। ओना दरमेहे तेते अछि जे नै किछु बुझि पड़ैए। लोन लऽ कऽ घर बनेलौं।

फुलेसर- केते लोन अछि?

श्याम- पैछला मास सठि गेल। ऐल-फैल घर अछि चारिटा कोठरी भड़ो लगौने छी। जइसँ परिवारक खर्च निकैल जाइए।

फुलेसर- तब तँ दरमाहा बँचबे करत।

श्याम- हँ।

फुलेसर- भगवान करैथ केतौ रही चैनसँ रही।

श्याम- बच्चा सभकेँ पढ़बैमे बड़ खर्च होइए।

फुलेसर- खर्च करै छी आकि अपन भार उतारै छी। आब गप आगू बढ़ाउ, कुसेसर।

कुसेसर- फुलेसर भाय, अहूँ किसान छी। दस बीघा खेत जोतै छी। खेतीक सभ भाँज बुझै छी। केते लगता खेतीमे लगै छै से अहाँसँ छिपल अछि।

फुलेसर- झाँपि-तोपि कऽ नै बाजू। खोलि कऽ साफ-साफ बाजू।

मुनेसर- फुलेसर बौआ, कुसेसर बजैमे धकाइए। हम कहै छी। इंजीनियर साहैब पाँचटा बँटेदार छी। अखैन धरि अदहा-अदही उपजा बँटैत एलिऐन। मुदा बेर-बेर रौदी दाही होइए। हिनकर (श्यामक) तँ किछु नहि, बिगड़ै छैन। उपजा नै होइ छैन। खेत तँ बँचले

रहै छैन। मुदा हमरा सबहक तँ सभ किछु चलि जाइए।

श्याम- अहाँ सभ अदहा बाँटि कऽ की हमरेटा दइ छी। आकि सभकेँ-सभ दइ छै। जे अदौसँ अछि।

फुलेसर- जे समय बीत गेल ओ तँ बीत गेल। पुन: घुरत नै। मुदा आँखियो मुनि कऽ जीब उचित नै।

मुनेसर- ओते चिक्कारीमे गप करबाक कोन जरूरी अछि। सोझ-साझ बात सुनू। सभ दिनसँ बटाइ करैत एलौं। जे नीक की अधला भेल, भेल। बिना कहने छोड़ि दैतयनि से नीक नै होइत तँए सोझहामे कहै छिऐन जे हम सभ बटाइ नै करब।

फुलेसर- एना औगुता कऽ किए बजै छी। केना रोग दबाइ केने छुटैए। हँ, समाजमे ई रोग भारी अछि। भने सभ बैसले छी किए ने विचारि कऽ रस्ता निकालि लेब। गामक जमीन गामेक लोक उपजौत।

श्याम- फुलेसर, पत्नीक विचार छैन जे बेचि लिअ। मुदा एकटा दोस्त छैथ ओ कहलैन जे अपन जमीन समाजकेँ सुमझा देलिऐन। बातो सत्य जे जे गाममे

रहता गाम हुनकर छिऐन। तँए खेतीक बात बुझै नै छी अहाँ सभ उचित रस्ता निकालि कहू, मानि लेब।

फुलेसर- केते गोटे स्कूल बनबै छैथ, केते गोटे अस्पताल। समाजमे एकरो जरूरत अछि। मुदा सभसँ प्रमुख जरूरी अछि जे गामक सम्पति (जमीन) कैँ समुचित उपए कए उपजा बढ़ौल जाए।

श्याम- उपजा केना बढ़त?

फुलेसर- बारह मासक सालमे सिरिफ वर्षे मौसम एहेन अछि जे सालो भरिकेँ प्रभावित करैए। खूब बरखा भेल दहार भेल। नै बरखा भेल रौदी भेल। सालो भरि खेतिहर त्राहि-कृष्ण करैत रहऽ।

मुनेसर- फुलेसर बौआ, अहाँ देखिते छी जे दूटा हाथ-पएर छोड़ि किछु अछि नै। तँए की हमसब ऐ गामक नै कहाएब से बात तँ नै अछि। इंजीनियर साहैब, सभ तरहेँ सम्पन्न छैथ मुदा छिआ तँ अही गामक। तँए...।

श्याम- तँए की?

फुलेसर- श्यामबाबू, अहाँ सिरिफ माटि बँटेदारकेँ देने छिऐ। मुदा माटिसँ उपजा केना हएत? ऐ बातपर विचार करए पड़त।

श्याम- जहाँ धरि संभव हएत, करैले तैयार छी।

फुलेसर- बीस बीघा जमीन अछि। दूटा बोंरिग आ एकटा दमकल कीनि बँटेदारकेँ दए दियौ। जखैन पानि हाथमे आबि जाएत तखैन बाढ़ि-रौदीक संकट कमि जाएत। आठ मासक बिसवासू खेती आ चारि मास अदहा भऽ जाएत। दहार नै रोकि सकब तँ रौदीसँ बँचौल जा सकैए।

श्याम- बड़बढ़ियाँ।

बँटेदार- एतबेटा सँ नै हएत। मोटा-मोटी यएह बुझू जे अहाँ सबहक (बँटेदार सबहक) शरीर आ इंजीनियर साहैबक पूजी रहतैन। तँए आरो किछु पूजी लगबैक जरूरत छैन।

श्याम- से की?

फुलेसर- खेत जोतैले बरद, नीक बीआ आ खादक ओरियान सेहो कऽ दियौ।

श्याम- बड़बढ़ियाँ। मुदा हमरा आपसी की हएत?

फुलेसर- खेतसँ लऽ कऽ दमकल-बोरिंग, बरद, खाद-बीआ लगा सभ पूजी भेल। बैंकक जे सूदि छै ओकरा धियानमे रखि आपसी हएत।

मुनेसर- की इंजीनियर साहैब, मंजूर अछि?

श्याम- अहाँ सभ कहू।

कुसेसर- ए-मस्त।

फुलेसर- जँ स्वीकार भेल तँ सभ थोपड़ी बजा...।

(सभ थोपड़ी बजा निर्णएकेँ स्वीकार केलैन।)

समाप्त

शब्द संख्या: 637

तामक तमघैल

पात्र-परिचय

पुरुख पात्र-

1. रविन्द्र- उम्र: 45 बर्ख।
2. चन्द्रदेव- उम्र: 45 बर्ख।
3. सुनरलाल- उम्र: 35 बर्ख।

स्त्री पात्र-

1. रागिणी- उम्र: 65 बर्ख।
2. बलाटवाली- उम्र: 60 बर्ख।
3. पीपरावाली- उम्र: 25 बर्ख।
4. अनुराधा- उम्र: 45 बर्ख।

पहिल दृश्य-

(जेठ मास। एगारह बजैत। जेठुआ दृश्य।)

पीपरावाली- *(माथपर छिट्टामे पुरना पार्ट-पुर्जा साइकिलक नेने)* लोहा-लक्कर बेचै जाइ- जाएब ई.. य..अ..अ..ऐ..? *(रागिणी आ बलाटवाली घरक ओसारपर बैसल गप-सप्प करैत। कवाड़िनक अवाज सुनि..)*

रागिणी- कनी लोहा-लक्करवालीकेँ एम्हरे अबैले कहियौ। *(ओछाइनपर सँ उठि बलाटवाली आगू बढ़ि..)*

बलाटवाली- हइ पीपरावाली, कनी एम्हरे आबह। *(माथपर छिट्टा नेने पच्चीस बर्खक पीपरावाली छपुआ साड़ी पहीरने, पएरक चप्पल फटफटबैत अबैत.. ।)*

पीपरावाली- काकी, कनी छिट्टा टेक देथु। *(दुनू गोरे छिट्टा उतारि निच्चाँमे रखैत। माथ परहक बीड़बा निच्चाँ रखि आँचरसँ चानिपर चुबैत पसीना पोछैत। तैबीच रागिणी भीतरसँ -घरसँ- एकटा तामक तमघैल आनि आगूमे रखैत..)*

रागिणी- कनियाँ, हमरा तँ बुझले ने छेलए जे तोहूँ लोहा-लक्करक कारोबार करै छह। नै ते..?

पीपरावाली- दादी, अपने करै छी आकि दीन करबैए?

रागिणी- सासु-ससुर आ घरबला नै छह?

पीपरावाली- सासु-ससुर तँ घिना कऽ मुइल जे घरोबला तेहने अछि।

रागिणी- से की?

पीपरावाली- की कहबैन। पतिक खिघांस केने तँ पाप लागत। मुदा छिपौनौं तँ जिनगीए जाएत।
(गुन-धुनमे पीपरावाली पड़ि जाइत..)

बलाटवाली- दीदी, अही वेचारीक की सुनथिन। अपने सबहक नै देखै छथिन। हिनके बेटा-पुतोहु छैन, दस-बारह बर्खसँ कम गाम एना भेल हेतनि।

रागिणी- बाहरम बरख छी।

बलाटवाली- हिनके की कहबैन, हमरे नै देखै छथिन जे जहियासँ घरबला मुइल तहियासँ दुनू-बेटा-पुतोहु कोनो गरना मे रहए देने अछि। तखैन तँ अपना लुरिये-बुधिये जीबै छी।

(रागिणी आ बलाटवालीक बात सुनि पीपरावाली..)

पीपरावाली- दादी, ई बड़का छैथ। हम कहुना भेलौं तँ हिनकर धिए-पूते भेलिऐन। धिया-पुता जे माए-बाप लग झूठ बाजे सेहो नीक नै।

बलाटवाली- माइए-बाप किए कहै छहक, लोककेँ झूठ बजबे नै करक चाही।

पीपरावाली- काकी, कहलैथ तँ बेस बात, मुदा हम सभ तँ धंधा करै छी। झुठेक खेती छी। निच्चाँ-ऊपर सगतैर एक्के रंग।

रागिणी- बलाटवाली, जहिना अहाँ भरि दिन खुरपीसँ घास छिलै छी तहिना जे गपोकेँ छिलबै तँ उ घास जकाँ उखड़त की आरो असुआएल लोक जकाँ छिड़िया कऽ पसैर जाएत।

बलाटवाली- हँ, तँ आगू की कहए लगलहक हइ पीपरावाली?

पीपरावाली- घरबला दऽ कहए लगलयैन। की कहबैन काकी, बजैत लाज होइए। जहिना बुढ़बा -ससुर- तरिपीबा रहए तहिना बेटो छै? *(कहि चुप भऽ पुन: आँचरसँ चानि पोछए लगैत..)*

रागिणी- कमाइ-खटाइ नै छह?

पीपरावाली- से जे कमैते तँ अहिना रौदमे वौऐतौं। बापकेँ तँ खेत - पथार रहै बेचि-बिकिन कऽ पीलक। आब तँ ने खेत पथार अछि आ ने कमाइबला।

रागिणी- बच्चा कएटा छह?

पीपरावाली- दू भाए-बहिन अछि। जेठका छह बर्खक आ छोटकी चारि बर्खक।

रागिणी- अपने जे भौरी करए चलि जाइ छह तँ बेटा-बेटीकेँ बाप देखै छै किने?

पीपरावाली- की देखितै जनिपिट्टा। भरि दिन पीब कऽ अड़-दड़ बजैत रहैए। जहाँ किछ बाजब की सोहाइ लाठी लगा दइए।

बलाटवाली- तोहूँ किए ने उनटा दइ छहक?

पीपरावाली- धुर काकी, ईहो सएह कहै छैथ। कुल-खनदान की पुरखेटा बँचबैए आकि जनीजातियो। हमरा जे केतबो देह धुनत तँ ओकरा दोख नै लगतै मुदा हम जे उनटा देबै तँ कुल-खनदानक नाक कटतै आकि नै?

रागिणी- भरि दिनमे केते कमा लइ छहक?

पीपरावाली- दादी, कमाइएपर ने ठाढ़ छी। दुनू बच्चोकेँ पोसै-पालै छी आ घरोबलाकेँ पाँच-दस रुपैआ पीऐ लऽ देबे करै छिऐ ने?

बलाटवाली- एहेन छुतहर घरबला छह तँ किए ने छोड़ि दइ छहक?

पीपरावाली- काकी, मरलो-जड़ल अछि तँ घरेबला छी। यएह कहथु जे जे सुख घरबलासँ होइ छै से दोसरसँ हएत।

रागिणी- आब तँ हुसि गेलह। नै जे पहिने बुझल रहितए जे गाममे तोहूँ लोहा-लक्करक कारवार करै छह तँ तोरे दैतिअ।

पीपरावाली- केकरा हाथे बेचलखिन?

रागिणी- झंझारपुरक एकटा वेपारी अबैए, ओकरे हाथे।

पीपरावाली- झंझारपुरबला वेपारी तँ गरदैन कट सभ छी।

रागिणी- से की?

पीपरावाली- अनकर की कहबैन, अपने कहै छिऐन। आठ बरख पहिने हमर बाप खुआ चानीक हँसुली दुरागमनमे देलक। ऐठाम दिन घटल। पाँच बर्खक पछाइत जखैन वएह हँसुली ओही वनीमा ऐठाम बेचए गेलौं तँ रूपा कहि अधिये दाम देलक।

रागिणी- छोड़ह दुनियाँ-जहानक गप। अपन बाल-बच्चा, घर-परिवारक गप करह, जे केना ठाढ़ रहत? केकरा कहब भल आ केकरा कहब कुभल। कोइ अपना ले करैए।

बलाटवाली- कनियाँ, नैहरोमे यहए काज करै छेलह?

पीपरावाली- *(दुनू आँखि मीड़ैत..)* काकी, हिनकर पएर छुबि कहै छिऐन, कहुना भेली तँ माइए-पितियाइन भेली। गाम मोन पड़ैए ते..?

बलाटवाली- चुप किए भेलह? ऐठाम की कियो पुरुख-पातर अछि जे धखाइ छह। नैहरामे के ने खेलाइ-धुपाइए।

पीपरावाली- धुर बुढ़िया नहितन। एक्को-पाइ बजैमे संकोच नै होइ छैन।

रागिणी- ओहिना बलाटवाली चौल करै छह। बाजह..?

पीपरावाली- दादी, नैहर मोन पड़ैए तँ सुमारक होइए। माए-बापक बड़ दुलारू छेलिऐ। चारि भाँइक बीच असगरे बहिन छिऐ।

रागिणी- बिआह करै काल बाप देखा-सुनी नै केने छेलखुन?

पीपरावाली- अनकर दोख की देबै दादी। दोख अपन कपारक। जे कपारमे सटि गेल सहए ने हएत।

रागिणी- हँ, से तँ सएह होइ छै। मुदा तैयो तँ लोक लड़का-लड़कीक मिलान देखि ने बिआह करैए।

पीपरावाली- सोझमतिया बाप ठकहरबा सबहक भाँजमे पड़ि गेल।

रागिणी- ऐठामसँ आरो आगू जेबहक की घूमि जेबहक?

पीपरावाली- भऽ गेल भरि दिनक कमाइ। बालो-बच्चा देखना बड़ी खान भऽ गेल आ रौदो चंडाल अछि।
(तमघैल उनटा-पुनटा कऽ देखि बलाटवाली..)

बलाटवाली- आब ऐ सबहक कोनो मोल रहल दीदी। घरमे अन्न रहत तँ लोक माटियोक बरतनमे रान्हि-पका खा सकैए।

रागिणी- बड़ी खान तोरो भऽ गेलह कनियाँ। एक्केठाम बैसने काज नै चलतह। बाजह, केते दाम देबहक?

पीपरावाली- दादी, हिनका लग झूठ नै बाजब। एक तँ केते दिनसँ कारेवार करै छी। तहूमे एहेन तमघैल आइ पहिले दिन अभरल हेन। आइ रखि लथु। भाओ बुझि कऽ दोसर दिन लऽ जाएब।

रागिणी- एकरा नेने जाह। जेतेमे बिकेतह तइमे तूँ अपन बोइन निकालि दऽ दिहऽ ।

बलाटवाली- बड़ निम्मन चीज छैन।

रागिणी- जहिना सासु-ससुरक बीचक जिनगी, बेटा-पुतोहुक बीच बदैल जाइ छै तहिना अहू तमघैलकेँ भेल।

पीपरावाली- से की दादी, से की?

रागिणी- *(विस्मित होइत..)* की कहबह! नैहरमे जहिया देलक आ ऐठाम आएल तहिया घरक गिरथानि भऽ रुपैआ-पैसा रखैक तिजोरी बनल रहए। मुदा जखैन चोर-चहारक उपद्रव बढ़ल तखैन बुढ़हा -ससुर- झँपना दऽ ओछाइनिक तरमे गाड़ि कऽ रखै छला। आब तँ सहजे घरे ढनमना गेल तँ एकरा के पूछत।

बलाटवाली- कनियाँ, दीदियोकेँ खगता छैन। ताबे नून-तेल करैले अधो-छिधो दऽ दहुन आ लऽ जाह।

पीपरावाली- *(पचास रुपैआक नोट दैत..)* दादी, ताबे एते रहए देथुन। एक खेप गामपर सँ खने अबै छी। एक घोंट पानियोँ पीब लेब।

बलाटवाली- अखैन खाइ-पिबै बेर भऽ गेल। जँ अखैन नहियोँ आबि हेतह तँ ओही बेरमे, बेरू पहर लऽ जइहऽ ।

पीपरावाली- हँ सेहो हएत। जँ आइ नै आबि हएत तँ काल्हियो लऽ जाएब।

रागिणी- आब तोहर चीज भेलह। देखिते छहक चोर-चहारक उपद्रव। तँए नीक हेतह जे साँझो पड़ैत आइए लऽ जइहऽ।

पीपरावाली- बड़ बढ़ियाँ!❍❍

शब्द संख्या: 1000

दोसर दृश्य-

(खैर-चुन मिला, रागिणी अल्मुनियम डेकचीक पेनमे लगबैत..)

रागिणी- कपार फुटने लोकक सभ किछु फुटए लगै छै आ जुटने सभ किछु जुटए लगै छै। जखैन नूनो-तेल जोड़ैमे भीड़ पड़ैए तखैन डेकची कीनब असान अछि। केते दिन चुन-खैर साटि काज चलत। जखैन फुटि गेल तखैन आरो बेसीए होइत जाएत की दढ़ हएत।

(बाड़ीए देने झटकल बलाटवाली अबैत...)

रागिणी- किए सिताएल नढ़िया जकाँ बाड़ीए-बाड़ी पड़ाएल

एलह हेन?

बलाटवाली- *(हँफैत)* की कहबैन दीदी, ई की कोनो नै जनै छथिन जे जेहने बेटा अछि तेहने पुतोहु। बीचमे हम दुश्म न।

रागिणी- की करबहक, जखैन बेटे माएकेँ नै चिन्हलक, जेकरा नअ मास पेटमे रखलक तखैन पुतोहु तँ सहजे दोसराक बेटी छी।

बलाटवाली- कहै तँ दीदी ठीके छथिन, मुदा इएह कहथु जे ओइ घर-दुआरमे हमर किछो ने अछि। हम केतौसँ दहा - भसा कऽ आएल छी।

रागिणी- से के कहै छह! लोकक मतिये मरा गेल अछि। जे माए-बाप दादा-दादी एतेटा जिनगी बिता एते देखलक ओ किछु ने आ छौड़ा-छौड़ी किछु ने देखलक ओ बुद्धियार भऽ गेल अछि। से नै देखै छहक।

बलाटवाली- हँ, से तँ देखै छिऐ। सभ कहैए जे जुग-जमाना बदैल गेल आ बदलल किच्छो देखबे ने करै छिऐ तँ केना बिसवास हएत।

रागिणी- जहिना दिशांस लगने लोक पूबकेँ पछिम आ उत्तरकेँ दछिन बुझए लगैए तहिना भऽ गेल अछि।

बलाटवाली- नै बुझलयैन?

रागिणी- जुग-जमाना बदलल नै आगू डेग बढ़ौलक हेन। बदलैक माने होइ छै एकटाकेँ हटा दोसर आनब। से नै भेल हेन। जँ से होइते तँ देखतहक सभ किछु आगिमे जड़ि गेल आकि बाढ़िमे दहा गेल आ फेरसँ सभ किछु नवका भऽ गेल।

बलाटवाली- छोड़थु ऐ मगजमारी गपकेँ। अपन बात बिसैर जाएब। अनकर गप सुनने मगज भरिएबे करै छै। जाबे अपन बात नै बुझब ताबे माथ हल्लुक केना हएत?

रागिणी- की भेलह हेन जे एते..?

बलाटवाली- की कहबैन खेलरा-खेलरीक गप, दुनू एक्के रंग अछि। एते दिन मौगीक गप नीक लगै छेलै, आब जे हुकुम चलबए लगलै तँ बकछुहुल लगै छै।

रागिणी- तूँ तँ केहेन बढ़ियाँ जीबै छह। दुनू पहर दू पथिया घास अनै छह आ दुनू साँझ खाइ छह। बेटा -पुतोहु जे घर दफानियेँ लेलकह तँ आरो जान हल्लुके केलकह किने?

बलाटवाली- हँ, से तँ भेल। मुदा से देखल जाइए। जेते काल बाधमे रहै छी तेतबे काल ने, जखैन अँगनामे रहै छी तखैन केना देखल जाएत।

(तही बीच सुनरलाल ललकैत अबैए..)

सुनरलाल- दादी, ऐ बुढ़ियाकेँ पुछियौ जे किए छिटकल घुरैए।

बलाटवाली- दीदी, ऐ छौड़बाकेँ पुछथुन जे हमरा माए बुझैए। तखैन तँ अपन बनौल घर छी, लछमीक (गाए) सेवा करै छी वएह पार लगौती।

सुनरलाल- हम तोरा माए नै बुझलियौ आकि अपने पुतोहुकेँ कपारपर चढ़ा लेलेँ। जे तोरा कपारपर चढलौ ओ कुदि कऽ हमरा कपारपर नै चढ़ि जाएत।

बलाटवाली- हँ रौ, चारू कातसँ हारलेँ हेँ तखैन तूँ हमरा बुझबै छेँ। आइ तक एक्को दिन भेलौ जे माएकेँ कोनो तीरथ करा दिऐ। ई तँ धैन दीदी जे लाटमे जनकोपुर, सिंहेसरो आ कुशेसरो देखलौं।

रागिणी- *(बलाटवालीकेँ चोहटैत)* तोहूँ बड़े बजै छह, अखैन तक अपन उमेरोक ठेकान नै छह। किए बुढ़ियापर बिगड़ल छहक बौआ?

सुनरलाल- माएपर किए बिगड़ब। देखियौ जे हाथपर ओते पाइ नइए जे पनरहम दिन बेटाक नाओं कोचिंगमे लिखाएब तैपर सँ कन्यादानी नोत सासुरसँ चलि आएल हेन?

बलाटवाली- दीदी, बात छिपा कऽ बजै छैन। ई दुनूटा चाहैए जे गाए बेचि भोज खा आबी।

रागिणी- कनी फरिछा कऽ कहऽ?

बलाटवाली- ऐ धड़कटहाकेँ पुछथुन जे मात्रिक उसैर गेल आकि अछि। इज्जत बँचबै दुआरे भातिज सभकेँ कहि देलिऐ जे बौआ, आब ओते चलि-फिर नै होइए जे आएब-जाएब करब। ओहो सभ परदेशीया, गाम अबैए तँ दस-बीस रुपैइयौ आ लत्तो-कपड़ा दऽ जाइए। एकरा पुछथुन जे एक बीत नुओ कीनि कऽ दइए।

रागिणी- तोहूँ बड़ रगड़ी छह बलाटवाली। कनी फरिछा कऽ कहऽ बौआ?

सुनरलाल- दादी, ननौरवालीक बहिन बेटीक बेटीकेँ बिआह छी। सभटा परदेशीया भऽ गेल। नवका-नवका विधि बेवहार सभ करैए। पुरना गामक लोक लए छोड़ि देने अछि। रमेशक सभ संगी झंझारपुर कोचिंगमे नाओं लिखौत, ओकरा हम नै लिखेबै से केहेन हएत?

रागिणी- ऐ काजमे के मुहछी मारतह। भगवान करथुन चारियो अक्षर जे पढ़ि लेतह ओते नीके हेतह किने। अहुना लोक बजैए जे पढ़ल-लिखल हरो जोतत तँ सिरौर सोझ हेतइ। कनियाँक की विचार छैन?

सुनरलाल- ओ कहैए जे सबहक ठाठ-बाठ बजरूआ रहतै तैठीन जे हम जाएब से केना जाएब। हमरा देखि ओ सभ हँसत नै।

रागिणी- बौआ, जाबे असथिर मनसँ घरक नीक-अधला नै बुझबहक ताबे अहिना हेतह। तोरा जे कहबह से अपने नै देखै छह। बेटा-पुतोहु शहरमे खेत कीनलक हेन। घर बनौत। आ हम ऐठाम नून-तेल ले मरै छी।

सुनरलाल- अखनो जे एकरती चुहचुही अछि से अही बुढ़ियापर। खेत-पथारक कोनो लज्जैत अछि। गोटेबेर बाढ़िये चलि अबैए तँ गोटेबेर रौदीए भऽ जाइए। गोटे साल हबे तेहेन बहैए जे दने भौर भऽ जाइ छै। किड़ी-फतीगिंक चरचे कोन।

रागिणी- बौआ, घरक पुरुख तँ तोंही ने छहक? तोंही ने गारजन भेलहक?

सुनरलाल- हँ, से तँ छिऐ मुदा कियो मोजर देत तखैन ने। ई बुढ़िया अखनो बेदरे बुझैए तँ घरवाली की बुझत?

बलाटवाली- थुक देथुन एहेन छौंड़बाकेँ?

रागिणी- दुनियाँमे माइयक सेवा बेटा लेल ओहन होइत जेकर जोड़ा नै छै। तखैन रंग-बिरंगक माए-बाप, बेटा-बेटी भऽ गेल अछि। तँए दुनियाँ दिस नै देखि अपन ऐनामे माएकेँ देखि हृदैमे समुचित जगह देबाक चाही।

बलाटवाली- दीदी, पैघ फड़क पैघ लत्ती होइ छै, मुदा छोटक तँ छोटे होइ छै।

रागिणी- हँ से तँ होइ छै। अच्छा बौआ, एते दूरक लत्ती केना पकैड़ लेलकह। नैहर-सासुर धरिक लत्ती तँ ठीक छै मुदा नोनी साग जकाँ केना एते चतैर गेलह।

सुनरलाल- दादी, की कहब। ई सार मोबाइल जे ने करए। मोबाइलेपर नोत-पिहान, ए.टी.एम.सँ लेन-देन तेहेन रस्ता धड़ा देलक हेन जे फुदियोसँ बेसी लोक उड़ए लगल हेन।

रागिणी- बौआ, अनकर की कहबह, अपना पोताकेँ दस बरख भऽ गेल अछि, अखैन तक एक नैन देखलौं तक नै। तखैन तँ छातीमे मुक्का मारनहि छी जे जखैन बेटे नै तखैन पुतोहुए आ पोते-पोती केतए।

सुनरलाल- तखैन की करी दादी?

रागिणी- बौआ, किछु जे धाँइ दऽ कहि देबह से नीक नै हएत। किए तँ घरमे *(परिवारमे केते)* केते रंगक लोक रहैए। अपना रंगे सभ देखै छै। तँए एक्के बात एककेँ नीक लगै छै दोसरकेँ अधला। जेकरा अधला लगतै ओ तँ अधले कहत।

सुनरलाल- दादी, अहाँक बात माएओ मानैए। अहाँ जे कहब सएह करब।

रागिणी- बौआ, देखहक जखने कमाएत कोइ आ खर्च करत कोइ तखने किछु-ने-किछु गड़बड़ हेबे करत।

सुनरलाल- तखैन?

रागिणी- यएह जे परिवारकेँ सभ संस्था बुझि इमनदारीसँ जीबए।

सुनरलाल- ननौरवाली केना सुढ़ियाएत?

रागिणी- बौआ, बेटा तोरे नै ननौरोवालीक छिऐ। स्कूलमे की खर्च होइ छै से तँ तूँ बुझै छहक। मुदा माए नै बुझै छै। तँए कहक जे रमेशक नाओं स्कूल जा लिखा दियौ।

बलाटवाली-　　बेस कहलिऐ दीदी। बैसल-बैसल देह पोसैए आ बात गढ़ैए। भने कहलिऐ?

सुनरलाल-　　कहने थोड़े चलि जाएत। कहत जे बुझले ने अछि वौआ जाएब।

रागिणी-　　*(मुस्कियाइत)* बौआ, यएह बात सभकेँ बुझए पड़तै। सोझहे कौआ जकाँ अकासमे कुचड़ने नै ने हेतइ।

बलाटवाली-　　दीदी कहथुन ने, जे हाटपर दू सेर सीम, भट्टा कीनत तँ संगे दुनू गोरे जाएत। आ स्कूलमे जा कऽ नाओं लिखा देतै, से नै हेतइ। तैकाल पाग उतैर जेतइ।

रागिणी-　　बेस तँ कहलहक।❍❍

शब्द संख्या: 1105

तेसर दृश्य-

(डेराक बरामदा। चारि कुरसी एक टेबुल। टेबुलक एक भाग रविन्द्र आ दोसर भाग अनुराधा बैसल..)

रविन्द्र- की समय आ की सपना छल। आइ की देखि रहल छी।

अनुराधा- जेना बुझि पड़ैए जे कौलेजक ओ दिन मोन पड़ि रहल जइ दिन अहिना कौमन रूममे बैस गप-सप्प करैत रहै छेलौं।

रविन्द्र- हँ, सपना तँ साकार भेल जे जहिना अहाँ देखि संगी बनेबाक इच्छा भेल। मुदा एकटा कहू जे ओइ समय अहाँ की सोचैत रही। जे कौलेजसँ निकलला बाद की करब?

अनुराधा- *(विस्मित होइत)* सभ कर्मक खेल छी। जा धरि संगीक बंधनमे नै बान्हल गेल छेलौं ताधैर एकटा झिझरीदार परदा बीचमे छल, जे आब नइए।

रविन्द्र- की मतलब?

अनुराधा- मतलब यएह जे सृष्टिक एक कर्ता रूपमे अपनाकेँ पाबि रहल छी। मुदा..?

रविन्द्र- मुदा की?

अनुराधा- अपन प्रवल इच्छा रहए जे प्रोफेसर बनि बाल-बोधकेँ बाट देखाएब मुदा आइ बुझि पड़ैए जे अपनो बाट अन्हराएले जा रहल अछि।

रविन्द्र- से की?

अनुराधा- यएह जे एम.ए.क डिग्री बेकार लेलौं। की जिनगी अछि? यएह ने जे भानस करै छी अपनो खाइ छी आ अहूँ सभकेँ खुआबै छी।

रविन्द्र- *(मुस्की दैत)* एकरा कम बुझै छिऐ?

अनुराधा- कम तँ नै छिऐ मुदा जेकरा मौनसूनक बोध नै रहत ओ जँ हथिया नक्षत्रक बर्खा देखत, से केते काल?

रविन्द्र- गप-सप्पक ओझरी की तिआरि जालसँ कम होइए। एकबेर ओझराएत तँ ओकरा फेकै पड़त। अच्छा, ओइ सभ गपकेँ छोड़ू अखुनका गप करू।

अनुराधा- जखैन अपन जमीन भऽ गेल तखैन अनेरे आठ हजार भाड़ाबलाकेँ किए दइ छिऐ?

रविन्द्र- भरिसक जमीन बेचए पड़त। घर नै बना पाएब।

अनुराधा- एना निराश किए भेल जाइ छी?

रविन्द्र- निराश केना नै हएब! ने कोनो बैंकक नोकरी करै छी जे दरमहो बेसी आ कमीशनो भेटत आ ने प्रशासनिक सेवामे छी जैठाम 'राम-नाम'क लूट भऽ रहल अछि।

अनुराधा- (मुड़ी डोलबैत) हँ से तँ बान्हल दरमाहा अछि। एकटा करू, किछु ट्यूशने करू आकि कोनो कोचिंगे पकैड़ लिअ।

रविन्द्र- ई ने तँ बुझै छिऐ जे बर-पीपरक गाछ जकाँ मनुक्खो अछि, चालिस टपि गेलौं। अखैन तँ चश्मे टाक जरूरत भेल हेन, आगू तँ बाँकीए अछि।

अनुराधा- तखैन?

रविन्द्र- तखैन की अहू तँ संगे पढ़ने छी। संगीए छी तखैन आइ किए पुछै छी।

अनुराधा- पुछब बड़ अधला भेलै। ऐ घरक चिन्ता अपने नै करब तँ कियो आन आबि कऽ देत।

रविन्द्र- से तँ नै करत मुदा एकटा बात कहूँ जे जइ दिन दरमाहा उन-सँ-दून भेल आ तइसँ दुनू गोरेक मन खुशी भेल। जइ खुशीमे बजारसँ सजा कऽ अनने रही। तइ दिन आमदनी तँ देखलिऐ मुदा खरचा देखलिऐ। छह महिनासँ घरक भाड़ा विवादमे पड़ल

अछि। ओ आठ हजारसँ दस हजार कऽ देलक। बेसी बात नै करब, एक्केटा बात कहू जे मोबाइलेमे केते महिना उठैए।

अनुराधा- *(गुम्म भऽ उपरो-निच्चाँ देखैत आ मुड़ियो डोलबैत..)* मुड़ियो डोलबैत।

रविन्द्र- गुम्म किए छी। समाजक पढ़ल-लिखल लोक तँ अपने सभ छिऐ।

अनुराधा- हँ, से तँ देखै छी रंग-बिरंगक खरचा बढ़ि गेल हेन। एते दिन किताबो-पत्रिका पढ़ि-पढ़ि समय बितबै छेलौं आब जे टी.बी. अछि तँ बिजलीक लाइने ने रहै छै।

रविन्द्र- अपनो मन जेना किताब दिससँ उचटले जाइए। एते दिन इच्छा रहै छेलए जे किछु नव चीज पढ़ि विद्यार्थीकेँ पढ़ाबी मुदा आब तँ रटले साँक मंत्र जकाँ, बकि दइ छिऐ।

अनुराधा- *(रिंग सुनि मोबाइल उठा)* हेलो?

चन्द्रदेव- हँ, हँ मुम्बईसँ चन्द्रदेव बाजि रहल छी।

अनुराधा- *(सुखल हँसी हँसि..)* आहा हा, चन्द्रदेवबाबू?

चन्द्रदेव- हँ, हँ अनुराधा जी?

अनुराधा- हँ, हँ, हँ।

चन्द्रदेव- अहींक शहर आबि गेल छी। एक घन्टाक समय खाली अछि तँए सोचलौं जे मिलि-जुलि ली। पान-सात मिनटमे डेरा पहुँच रहल छी।

अनुराधा- अबस्स-अबस्स अबिऐ। दोसो डेरेपर छैथ।

चन्द्रदेव- गाड़ीमे मोबाइल गड़बड़ाइए। आगूक गप डेरेपर हेतइ।

रविन्द्र- चन्द्रदेव सेठ भऽ गेल। पँच-पँचटा नोकर। अपन तीन-तीनटा गाड़ी।

अनुराधा- जेकर भाग चमकै छै तेकरा अहिना होइ छै।

रविन्द्र- कहलिऐ तँ बेस बात मुदा ई बुझै छिऐ जे एक्के कौलेजसँ निकलल एक गोरे लाखक कमाइ करैए आ एक गोरे पाँच हजारपर शिक्षा मित्र अछि।

अनुराधा- हँ, से तँ अछि।

(नव मोडलक पोशाकमे चन्द्रदेवक प्रवेश..)

रविन्द्र- *(दुनू हाथे बाँहि पकैड़ छाती मिलबैत..)* भाय, भाय, अहाँ तँ बड़का लोक भऽ गेलौं।

चन्द्रदेव- नै-नै भाय, मनुख केतौ रहए मुदा हृदए तँ वएह रहै

छै। की अनुराधा जी।

अनुराधा- *(सरमाइत)* चन्द्रदेवबाबू केतए आ अनुराधा केतए। आब ओ सभ पैछला गप स्मृति बनि किछु मनो अछि आ बेसी बिसरिये गेलौं।

चन्द्रदेव- मुनेसरक दोकानक छोला आ कपरकट्टा दोकानक गुप-चुप।

अनुराधा- जइ दिनक जे भोग-पारस छल भेल। आइ जे अछि से भऽ रहल अछि।

चन्द्रदेव- भाय, अपन घर छिअ आकि भाड़ाबला?

रविन्द्र- *(मलिन होइत..)* भाय, एते दिन अशो छल मुदा..?

चन्द्रदेव- मुदा की?

रविन्द्र- अर्थक जालमे ओझरा गेल छी। गुण अछि जे बेसी धिया-पुता नै अछि।

चन्द्रदेव- परिवार नियोजन करा लेलह?

रविन्द्र- हँ, मुदा दुइयोटा कैँ पार लागब कठिन बुझि पड़ि रहल अछि।

चन्द्रदेव- भाय, जेते भारी जिनगीकैँ बुझै छहक ओते भारी कहाँ अछि। अपनासँ बेसी वाइफ कमाइए।

अनुराधा- ओहो नोकरी करै छैथ?

चन्द्रदेव- नै। लाइसेंस करा कऽ अपन एकटा ब्रांच खोलने छी। पचाससँ ऊपरे एजेंट काज कऽ रहल अछि।

अनुराधा- पैघ लोकक पैघ बात।

रविन्द्र- हमरो कोनो विचार दाए तँ..?

चन्द्रदेव- गाममे की कम सम्पैत छह। बेचि कऽ लऽ आनह। कहबे केलह जे दू कट्ठा जमीन कीनने छी। निच्चाँ-ऊपर मकान बना लैह। तेते भाड़ा हेतह जे घरक काज अनेरे हराएल रहतह।

रविन्द्र- भाय, तेना ने तोरा देखि हेरा गेलौं जे चाहो-पान पछुआ गेल।

(अनुराधा भीतर जाइत..)

चन्द्रदेव- जखैनसँ गाड़ीसँ उतरलौं तखैनसँ बुझि पड़ैए जे गरमे देह झड़कैए।

रविन्द्र- की कहबह ऐठामक पानि-बिजलीबला सबहक किरदानी।

चन्द्रदेव- से की?

रविन्द्र- देखिते छहक जे एते गरमी अछि बिजलीक केतौ पता नै।

(पानि-चाह आनि अनुराधा टेबुलपर रखैत। तीनू गोरे तीनू दिस बैस, पानि पीब चाह पिबैत..)

अनुराधा- चन्द्रदेवबाबू, केते दिनसँ अपनो मनमे नचै छेलए जे गामक खेत-पथार बेच, एतै बेवस्था कऽ ली मुदा अपने दुविधामे पड़ल छैथ ।

चन्द्रदेव- से की?

रविन्द्र- माए गाममे अछि। जँ हम बेचए चाहब आ ओ नै बेचए दिअए तखैन की करब। माए बेटामे झगड़ा करब?

अनुराधा- हक-हिस्सा ले तँ लोक बापोसँ झगड़ा करैए आ अहाँ माइयेक गप करै छी।

रविन्द्र- बापसँ झगड़ा करब नीक मुदा माएसँ..?❍❍

शब्द संख्या: 949

अन्तिम दृश्य-

(रागिणीक पुरान घर। बरसातक झमारल..)

रविन्द्र- माए, छुट्टी नइए। बरह-बजिया गाड़ीसँ चलि जाएब।

रागिणी- एते औगताएल किए छह। एते दिनपर एलह, तखैन एते किए औगताएल छह। कम-सँ-कम, जहिना कोटमे जेते मासक एस्काउन्ट रहल तेते दिन कस्टडीमे रखि जमानत भऽ जाइ छै तहिना कम-सँ-कम, दसो दिन तँ रहऽ।

रविन्द्र- अखैन बहुत कड़ाइ कौलेजमे चलि रहल अछि। एते दिन तँ नहियोँ गेने काज चलि जाइ छेलए। आब तँ विद्यार्थी आबह कि नै आबह मुदा प्रोफेसरकेँ जाएब अनिवार्य भऽ गेल अछि।

रागिणी- माल-जालकेँ लोक बान्हि कऽ रखैए, मनुखकेँ कियो थोड़े बान्हि कऽ रखि सकैए।

अनुराधा- माए, हमसब किम्हर एलिऐन से तँ पुछबे ने केलैथ?

रागिणी- अपनो घरमे लोककेँ एहन बात पुछल जाइ छै जे तोरा सभकेँ पुछबह।

अनुराधा- काजे आएल छी।

रागिणी- केहेन काज, बाजह?

अनुराधा- से तँ बेटा सोझहेमे छैन, पूछि लेथुन।

रागिणी- से की बौआ नै सुनैए जे पुछबै। बाजत तँ वएह ने। बिना बजने थोड़े बुझब।

रविन्द्र- माए, पाँच बरख जमीन कीनना भऽ गेल। सोचने रही जे ऐ साल जमीन कीनि लइ छी आ ऐगला साल घर बना लेब। से गरेपर ने चढ़ैए।

रागिणी- से तँ अपने बुझबहक? जे की सोचलौं आ की होइए। हम स्त्रीगण जाति की बुझबै जे घर केना बनौल जाइए। ईहो (अपन घर देखबैत..) तँ अपने (पति) बनौल छिऐन जे कष्टो काटि कऽ आसरा अछि।

रविन्द्र- माए, जहिना अरामसँ कमाइ छी तहिना अरामे सँ खरचो भऽ जाइए।

रागिणी- से की?

रविन्द्र- कोनो की एक रंगक खर्च अछि। जहिना उन-सँ-दून दरमाहा बढ़ल तहिना ने खरचो उन-सँ-दुन भऽ गेल अछि। केतबो बचा कऽ रखए चाही छी, कहाँ बँचि पबैए।

रागिणी- खाएर, छोड़ह ऐ सभ गपकेँ। की कहलह जे काजे..?

रविन्द्र- दुनू प्राणी विचारलौं हेन जे गामक चीज-वौस बेचि कऽ घर बना लेब। अनेरे जे एते भाड़ा भरै छी से तँ नै भरए पड़त।

रागिणी- ऐठामक जे चीज-वौस बेचि लेबह तँ हम केतए रहब?

अनुराधा- किए, हिनका रहैले घर नै छैन। बेटा कियो बीरान छिऐन।

रागिणी- से के बीरान कहत। मुदा..?

अनुराधा- मुदा की?

रागिणी- मनुख दू जिनगी जीबैए। एक बेटा-बेटीक दोसर माए-बापक। जाबे सासु-ससुर जीबै छला, ताबे बेटी जकाँ रहलौं। मुदा ई तँ दुनियाँक खेले छी जे सभ सभ दिन नै रहत। जहाँ धरि बनि पड़ल तहाँ धरि एक्को दिन सासुक मुहेँ अवाच् कथा नै सुनलौं।

अनुराधा- की कहै छथिन से नै बुझि रहलयैन हेन?

रागिणी- अमरूख लोकक बात जे पढ़ल-लिखल बुझैत तँ अहिना दुनियाँ रहैत। छातीपर हाथ रखि बाजह जे दस-बारह बरिससँ एक्को-पाइ नूनो-तेल ले देलह?

अनुराधा- ई दोख हिनकेटा मे नहि, हिनका सन-सन सभ सासुमे आबि गेल हेन।

रागिणी- ऐमे तोहर दोख नै छह, दोख छै जुग-जमानाक विचारकेँ। जेहेन जुग हएत तेहने ने विचारो हएत आकि जेहने विचार हएत तेहने ने जुगो हएत। परोछा-परोछी नै बजै छी, सोझमे कहलिअ हेन। धरमागती बाजह।

(तत्-मत् करैत अनुराधाकेँ देख..)

रविन्द्र- माए, तोहर बात कटैबला नै अछि। तखैन मनमे यएह रहल जे सभ किछु तँ ऐछे तखैन जरूरते की पड़तै।

रागिणी- तूँ पुरुख जाति किआँने गेलहक माइयक छातीकेँ, जे बच्चाकेँ छातीक दूध पिआ ठाढ़ करै छै ओकरा आगूसँ जँ बच्चा हटा लेल जाए तँ ओइ माइक दशा की हएत?

रविन्द्र- *(मुड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ हएत।

रागिणी- हम तोरा कहाँ कहै छिअ जे कमा कऽ सभटा हमरे दऽ दए, ओते खगतो ने अछि। तूँ नोकरी करै छह, सरकारक काज करै छहक, मुदा पुतोहु बाल-बच्चा। जँ एहेन पुतोहु भगवान दैथ जिनकर हाथक भोजन पइठ नै हुअए तइसँ नीक जे नहियेँ दैथ।

रविन्द्र- से की, से की माए?

रागिणी- किछु ने।

रविन्द्र- मनमे एते दुख नै कर।

रागिणी- दुखो वएह नीक होइ छै जइसँ किछु भेटै छै। जइसँ किछु भेटल नै तइसँ नीक जे मनमे दुख अबै ने दी। जहिए अपने (पति) संग छोड़लैन तइ दिन मनकेँ बुझा देलिऐ जे संग पुरैक हाथ जे पकड़ने छला तिनकासँ हाथ छुटि गेल।

अनुराधा- माए, अनेरे ई सोग अरैज-अरैज बोझ बना माथपर रखने छैथ।

रागिणी- हमहीं किए रखब, सभ बाप -माए, दादा-दादी अपन ऐगला परिवारक बोझ माथपर रखैए। दस बर्खक पोता अछि, जेकरा आइ देखलौं हेन। यएह मनोरथ भगवान देलैन।

अनुराधा- अपने नै जाइ छैथ आकि हम सभ मनाही करै छिऐन?

रागिणी- मनाही दू रंगक होइ छै, एकटा होइ छै जे मुँह फो ड़ि कहब आ देसर होइ छै उनटा बात-विचार। पहुँनाइयो लाथे जे जाएब से ने काहे-कूहे बाजए अबैए आ ने एक्कोटा चिन्हार लोक भेटत।

अनुराधा- हम सभ जे छिऐन?

रागिणी- कहलौं तँ बेस बात मुदा बेटा -पुतोहु आकि परिवारक आने, सभकेँ एक सीमा छै। सीमा भीतर गपे केते रहै छै। मुदा चौबीस घन्टाक दिन-राति छोट तँ नै होइए।

अनुराधा- फेर लोकक आएब-जाएब रहै छै आकि नै?

रागिणी- की उत्तर देबह।

रविन्द्र- किए, किए माए चुप भेलँह?

रागिणी- चुप की हएब। तूँ सभ चुप केने छह। जइ घरमे जनम लेलह, खेललह-धुपलह, पढ़ि-लिख नोकरी पौलह, ओही घरकेँ बिसैर गेलह।

रविन्द्र- की करबै तेते काज बढ़ि गेल अछि जे नीनो हराम भऽ जाइए।

रागिणी- हम से कहाँ किछु कहै छिअ। मुदा कान खोलि दुनू बेकती सुनि लाए जे जहिना अपने (पति) अपन

लगौल गाछीमे बास करै छैथ तहिना हमहूँ बास करब। जहिना तूँ अपन मनक मालिक छह तहिना हमहूँ छी।

रविन्द्र- आशा लगा आएल छेलौं।

रागिणी- तोहर आशा भग्न कहाँ होइ छह। अखने आँखि मुनब, सभटा तँ तोरे हेतह। हमरो तँ जिनगी अछि। जिनगी लेल तँ सभ कथुक बेगरता सभकेँ रहै छै।

रविन्द्र- आब केते दिन..?

रागिणी- जिनगीक कोनो ठेकान अछि, अखनो टन कहि देब आ पच्चिसो पचास बरख जीब सकै छी। तइले..?
(पीपरावाली माथपर छिट्टा लेने प्रवेश...)

पीपरावाली- दादी, भगवान हिनका भल करनु बड़बढ़ियाँ कमाइ भेल। दुनू भाए-बहिनकेँ आंगी-पेंट कीनि देलिऐ।

रागिणी- भगवान भल करथुन। मुदा उसरलमे एहल। आब कहाँ कोनो बरतन-बासन रहल। जेतबेक बेगरता होइए तेतबे अछि।

रविन्द्र- घरक सभ बरतन बेचि लेलैं माए?

रागिणी- मनसँ नै हटै छेलए, मुदा दोसर उपाइए की?

रविन्द्र- आब केना चलतौ?

रागिणी- अखैन तक तँ बरतने-वासन सठल। अखैन गहना-जेबर तँ ऐछे। जेकरा बेसी छै ओकरा लेल गहना श्रृंगारक वौस छिऐ आ जेकरा नै छै तेकरा लेल पेटेक आगि मिझबैक सम्पैत।

रविन्द्र- कोन वस्तु छेलै कनियाँ, जे बढ़ियाँ कमाइ भेल?

पीपरावाली- काका, हिनकासँ लाथ कोन। जहिना दादी तहिना ने ईहो छैथ। तामक तमघैल छेलइ।

अनुराधा- आब तँ तामक दाम बहुत बढ़ि गेल अछि।

रविन्द्र- कोन चीज सस्त रहल।

रागिणी- बौआ, से बात नै छै, महग वौस सस्ता भऽ गेल आ सस्ता वस्तु महग।

अनुराधा- से की?

रागिणी- की कहबह। जखैन मनुखे अपन मोल नै बुझैए तखैन चरचे की?

((समाप्त))

शब्द संख्या: 1105

बीरांगना

पात्र परिचय-

स्त्री पात्र-

1. सोनमाकाका- उम्र: 65 बर्ख
2. चेथरू- उम्र: 45 बर्ख
3. जुगेसर- उम्र: 50 बर्ख
4. अयोधी- उम्र: 30 बर्ख
5. जीवन- उम्र: 35 बर्ख

स्त्री पात्र-

1. रूपनी- उम्र: 60 बर्ख
2. कुशेसरी- उम्र: 50 बर्ख
3. कोशिला- उम्र: 22 बर्ख

पहिल दृश्य-

(अपन-अपन आँगनसँ निकैल रस्ताक भकमोड़ीपर ठाढ़ भऽ...)

सोनमाकाका- सुनै छी जे रमफलबा आएल हेन?

रूपनीदादी- सएह तँ सुनलौं मुदा तेहेन लोकक मुहेँ सुनलौं जे सुनियोँ कऽ अनबिसवासे अछि। तँए दोसर गोरेसँ भाँज लगबए विदा भेलौं।

चेथरू- नै-नै बात ठीके छिऐ।

सोनमाकाका- से तूँ केना बुझै छहक?

चेथरू- ओहन लोकक मुहेँ सुनलौं जेकरा मुहसँ असत् बात निकैलते ने छइ।

सोनमाकाका- जेकरा मुहेँ ओ सुनने हएत वएह जँ असत् कहने होइ, तखैन?

रूपनीदादी- से तँ भऽ सकै छइ। मुदा तहूमे भाँज छइ।

सोनमाकाका- से की भाँज छै?

चेथरू- से अहाँ नै बुझै छिऐ काका, जे देखलाहा बजैए ओ सत् होइ छै आ जे सुनलाहा रहै छै ओइमे दुनू होइ छइ।

सोनमाकाका- हँ से भऽ सकैए। केहेन लोकक मुहेँ सुनने छेलह?

चेथरू- दूधवाली मुहेँ सुनने छेलौं। वएह जे दूध बेच कऽ ओइ टोलसँ आएल छेलै, बाजलि रहए।

सोनमाकाका- उ तँ दूध बेचैमे लगल हएत आकि बात बुझै पाछू।

चेथरू- ओकरा अहाँ नीक जकाँ नै चिन्है छिऐ। कोनो की माछ-कौछ बेचैवाली छी जे पैरक औंठासँ पलड़ा दाबि उठा देबै आ घट्टी जोखि देबइ।

सोनमाकाका- दूधो बेचैवाली तँ पोखैरक पानियेँ मिला दइ छै, से।

चेथरू- हँ, से तँ होइ छइ। मुदा ओकर कारोबार रहै छै कएक दिन। बाढ़िक पानि जकाँ आएल आ पड़ाएल।

रूपनीदादी- हँ, से तँ देखै छिऐ जे जहियासँ काज धेलक तहियासँ ने ओकर दूधनप्पा फुच्ची फुटलै आ ने नाप-जोखक बदनामी कहियो लगलै।

चेथरू- *(अपन पक्ष मजबूत होइत देख, मुस्किया..)* दादी, बुढ़िया देखैमे ने एक चेराक बुझि पड़ैए मुदा गामेक नहि, घर-घरक रत्ती-बत्ती बात बुझैए।

सोनमाकाका- की सभ कहलकह?

चेथरू- बाजलि जे दिल्लीसँ मालिक अपना गाड़ीपर लादि कऽ पहुँचा गेल हेन।

सोनमाकाका- एतबे कहलकह आकि आगूओ किछु बजलह?

चेथरू- एतबे बजैमे तँ ओ अपन डाबासँ दूध नापि लोटामे दऽ देलक आ उठि कऽ विदा भेल।

सोनमाकाका- एहेन-एहेन बात तँ सेरिया कऽ ने लेबाक चाही।

चेथरू- जाइत काल एते बात भनभनाइत सुनलिऐ जे एकटा टाँग काटि कऽ पठा देलकै आ पान सए रुपैआसँ नोइस हेतै?

सोनमाकाका- एते पैघ बात आ कनियोँ अँटका कऽ नै पूछि लेलहक?

चेथरू- काका, ओइ बुढ़ियाकेँ की बुझै छिऐ, कोनो की हमरे ऐठामटा अबैए जे निचेनसँ गप-सप्प करब।

सोनमाकाका- तखैन?

चेथरू- ओ बुढ़िया फुच्चीए-फुच्ची दूधेटा लोककेँ दइ छै आकि मिसरियो घोड़ै छइ।

सोनमाकाका- से की?

चेथरू- हम की ओते बुझै छी जे तेना भऽ कऽ बुढ़ियाक सभ बात बुझि लेबै, तखैन तँ जेते काज रहैए ओते तँ भइए जाइए। दादी लगमे सभ दिन बैसैत देखै छिऐ।

रूपनीदादी- हँ, से तँ बैसबो करैए आ गामक तीत-मीठ गपो कहैए। मुदा घुरैकाल बैसैए, तँए अखैन भेँट नै केलक हेन।

सोनमाकाका- ऐ ततमतीसँ नीक जे ओकरा घरेपर पहुँच मुहाँ-मुहीं गप कऽ ली।

चेथरू-	काका, तइले तीनू गोरे किए जाएब। असगरे जाइ छी, सभ बात बुझि कऽ सुनाइयो देब?

रूपनीदादी-	सभ दिन तौं चेथरू-के-चेथरूए रहि गेलैं। पोता-पोती भेलौ से होश नै छौ।

चेथरू-	दादी, एक ढाकीक के कहए जे सतरह ढाकी पोता-पोती भऽ जाएत तैयो अहाँ लगमे चेथरूए रहब। कोनो बात-विचारक जे जरूरत हएत तँ अहाँसँ नै पुछब, सोनमाकाकासँ नै पुछबैन तँ की बगूरक गाछ आकि पसीद गाछसँ पुछबै?

रूपनीदादी-	देखहक चेथरू, हम अपना नजैरिये देखबो करब आ पुछबो करबै, तहिना तोहूँ सोनाइ भेलह किने?

चेथरू-	तइ नजैरिये कहाँ कहलौं। तीनू गोरे जे एक्केटा काजमे बड़दैतौं, तइ दुआरे कहलौं।

रूपनीदादी-	से बड़ बेस। मुदा काजक आँट-पेट नै बुझै छहक। कहैले सभ काजे छी, मुदा ओहूमे छोट-पैघ, नीक-अधला होइ छइ।

चेथरू-	कनी परिछा कऽ कहियौ?

सोनमाकाका- ठीके चेथरू, तूँ कहियो पुरुख नै हेबह?

चेथरू- काका, अहाँ सने जे कोनो पुरुखपना काज करबै तइसँ पुरुख नै हेबै।

सोनमाकाका- पुरुखक संगी हेबहक। पुरुख तखैन हेबह जखैन अपने ठाढ़ भऽ आगूक डेग बढ़ेबह। अखैन दोसर-तेसर बात छोड़ह आ रमरूपाक भाँज नीक-नहाँति लगाबह।

चेथरू- जखैन अहाँ सबहक विचार अछि तखैन तीनू गोरे चलू।
(तहीकाल आगूसँ जुगेसर अबैत..)

सोनमाकाका- जुगे, केम्हर-केम्हरसँ एलह?

जुगेसर- काका, की कहब *(गुम्म होइत...)*

चेथरू- मुँहक बात दबलह किए? किछु भेलौं तँ हम सभ समाज भेलौं। न्यायालय भेलौं। अगर हमरा समाजक अंगक संग कोनो अन्याय दोसर समाज

करत तँ ओ बरदाससँ बाहर अछि। की सोनमाकाका..?

सोनमाकाका- चेथरू, जे बात तूँ बजलह वएह गामक प्रतिष्ठा छी। मुदा, पाकल आम भेलिअ, सभ दारो-मदार तँ तोरे सभपर छह।

चेथरू- जुगे भाय, अहाँ तँ आँखिक देखल बाजब। रामरूपक की..?

जुगेसर- देखैबला दृश्य नइए। अपने रामरूप ओछाइनपर ओंघराएल अछि आ घरवाली ओछाइ निक निच्चाँमे ओंघरनिया दऽ रहल अछि। तीन सालक बच्चा झाँपल कपड़ा हटा-हटा पएर तकैए।

रूपनीदादी- बाप रे बाप! समाजक एकटा घर उजड़ि गेल।

जुगेसर- दादी, अहाँ नै जाउ। सोनमाकाका अहूँ नै जाउ।

सोनमाकाका- किए?

जुगेसर- ओहन दृश्य देखैक करेज आब नै रहल। हो-न-हो पहिलुके नजैरमे ने अपने..?

चेथरू- दादी, कहने तँ पहिने छेलौं, मुदा हमरा गपक मोजरे ने देलौं। आब कहू जे कोनो अनरगल कहने रही ?

सोनमाकाका- हँ, से तँ बात मिलिये गेलह। मुदा एते बात बुझि कऽ तँ नै बाजल छलह? अच्छा, एतै बैस कऽ सभ बात कहऽ।

जुगेसर- ओतए तँ लोकक करमान लगल छइ। तहूमे धिया-पुता आ झोटहा भरि देने अछि। चुट्टी ससरैक जगह नै छइ।

सोनमाकाका- गप किछु कहऽ ने?

जुगेसर- कोनो बात की सोझ डारिये चलए दइए। एक तँ कार कौआक जेर जकाँ धिया-पुता काँइ-काँइ करैए तैपर सँ जनीजाति भिन्ने छाती पीटैए।

चेथरू- तैयो तँ भाँजपर किछु गप चढ़ले हेतह?

जुगेसर- हँ, एते उड़नतीए सुनलौं जे डरेवर जाइ काल बाजल जे कारखाना मालिक इलाजमे तीन लाख रुपैआ खर्च केलखिन। पाँच सए खाइ-पीऐले, आ लत्ता-कपड़ा सेहो देलखिन।

रूपनीदादी- पान सए रुपैआ केते दिन चलतै। तहूमे सभटा लोथे भेल। जहिना रामरूप तहिना बच्चाक संग बच्चाक माइयो। केना वेचारी दुनूकेँ छोड़ि बोइन करए जाएत।

चेथरू- से तँ ठीके। मुदा दादी झोंटहा सबहक बि सवास कोन। बेटाकेँ जहर-माहूर खुआ देत आ घरबलाकेँ छोड़ि पड़ा दोसर घर चलि जाएत।

रूपनीदादी- सेहो होइए चेथरू। तोरो बात कटैबला नहियेँ छह मुदा एक्के दाबिये केना खिचड़ीयो रान्हवह आ खीरो। एकटामे नून पड़त एकटामे चिन्नी।

चेथरू- से तँ ठीके कहै छिऐ दादी। अहिना ने भालेसरोकेँ भेल। ओहो जे जमक गाछपर सँ खसि जाँघ तोड़लक आ डाक्टरो बुट्टी भिड़ा कऽ काटि देलकै। फेर ओ वेचारी (भालेसरक पत्नी) केना छह मसुआ बेटीक संग रहि ता जिनगी घरबलाक सेवा केलक।

सोनमाकाका- सोझहे सभ गप खिस्सा जकाँ सुनने नै हेतह चेथरू। ओना जुगेसर ठीके कहलकह। अखैन छोड़ि दहक। बेरू पहरमे चलब।

रूपनीदादी- हँ, हँ, एहेन-एहेन जगहपर नै गेने समाजक रसे की रहत। समाज तँ तखने ने समाज जखैन सबहक सुख-दुख संगे पोखैरमे नहाइ।

चेथरू- कनियेँ-कनियेँ जे सोचै छी दादी तँ बुझि पड़ैए जे समाजपर एकटा भार पड़ि गेल।❍❍

शब्द संख्या: 1021

दोसर दृश्य-

(अयोधीक दरबज्जा। दरबज्जाक ओछाइनिक एक कोनपर अयोधी बैसल दोसर कोनपर अयोधीक माए कुशेसरी बैसल..)

अयोधी- माए, आब की करब?

कुशेसरी- बौआ, आब छाती बदैल गेल। (आँखि मीड़ैत) धरमागती बात तोरा कहै छिअह।

अयोधी- अखैन जे तत्-खनात बेगरता आबि गेल पहिने से विचार दे। तखैन दोसर-तेसर सोखर सुनबिहैं।

कुशेसरी- बौआ, सएह कहै छिअह। लोकेक बेगरता लोककेँ होइ छइ। मुदा..?

अयोधी- चुप किए भेलैं?

कुशेसरी- लोकक बोन अफ्रिकनो बोनसँ घनगर अछि। तूँ ई नै बुझिहअ जे माए हमरा भाएकेँ खून दइसँ रोकत। मुदा तइसँ पहिने जँ बुझैक जरूरत छह से कहए चाहै छिअह।

अयोधी- माए, जाबे पेटक बात निकालि नै फेकब, ताबे गैस्टिकक रोगी जकाँ छुटैए। जइसँ कोनो बात सुनैक मने ने होइए।

कुशेसरी- बाजह, पहिने तूँ अपने कोठी खलिया कऽ झाड़ि लैह तखैन जे आनो अन्न ओइमे देबहक तँ तैयो एकछहे रहत।

अयोधी- खनदान दिस तकै छी तँ सुमारक लगैए। जहिना परबाबा आन गामसँ आबि बसला तहिना एकघराक घर अखनो छीहे।

कुशेसरी- जहियासँ ऐ गाममे पएर रखलौं तहियासँ तँ गामो आ परिवारोकेँ देखिते-सुनिते एलौं। मुदा तइसँ पहिलुका बात तँ बुझल नइए। बाजह?

अयोधी- परबाबा मात्रिकमे आबि कऽ बसल रहैथ। मात्रिकक डीह नीक डीह बुझलैन। गामक भागीन, तँए गामक बाट चिक्कन। केतौ खाधि पीछड़ नै।

कुशेसरी- आगूक पीढ़ी केना बढ़ल?

अयोधी- हुनका (परबाबाकेँ) दूटा बेटा आ दूटा बेटी भेलैन । परिवार गेना फूलक गाछ जकाँ झमटगर हुअ लगल। दुनू बेटी सासुर गेलैन। परिवारो नीक तँए समरस परिवार भेने समरस जीवन समरस सुख पाबि मुइला।

कुशेसरी- दुनू भाँइक परिवार?

अयोधी- दुनू भाँइयो आ माइयोक एहेन सोभाब रहैन जे कहियो कोनो बाते झगड़ा नै भेलैन। जेठका भायक बिआह धुमधामसँ भेलैन। मुदा छोटका तेहेन भाइयो, भौजाइयो आ माइयोक सहलोल भऽ गेलखिन जे बिआहे ने केलखिन।

कुशेसरी- परिवारक बात दुनू गोरे नै बुझौलखिन?

अयोधी- कहाँदन रहबो करथिन मैतछिन्नु जकाँ। कहियो झोंक चढ़ि जानि तँ भरि-भरि दिन, बिनु खेनौं-पिनौं कोदारीए भाँजैत रहि जाइ छेलखिन।

कुशेसरी- *(ठहाका मारि..)* मनुखदेवा ने तँ रहथिन?

अयोधी- एँह, ओतबे, कहियो झोंक चढ़नि तँ खैयो बेरमे पिढ़ियापर बैस रूसि रहैथ।

कुशेसरी- से किए?

अयोधी- *(हँसैत..)* ताबे तक रूसल रहैथ जाबे तक माए आगूमे नै आबि जानि। भाय-भौजाइक बातक कोनो मोजर नै।

कुशेसरी- माइयक बात मानि लेथिन?

अयोधी- माए आबि जखैन पुछथिन तँ कहैन जे बेटा बिनु माइयक सेवा केने खाइए ओ पापी छी। तँए पहिने एक हाथ सेवा तोरा कऽ देबौ तखैन मुँहमे अन्न-पानि लेब। एकभग्गु लोक जकाँ?

कुशेसरी- एकभग्गु लोक जकाँ नहि, एकबद्दू लोक जकाँ।

अयोधी- हँ, हँ, तहिना।

कुशेसरी- पैछला पीढ़ीसँ तँ छीहे। बौआ छातीपर हाथ रखि कहै छिअह। ऐ घरमे भिनौज हमरे करौल छी। जे ओइ दिनमे नै बुझै छेलिऐ।

अयोधी- से आब केना बुझै छिही?

कुशेसरी- हम दुनू परानी टटके जुआएल रही आ भैया दुनू परानी ठमैक गेल रहैथ। मलिकाइन बनबाक इच्छा केकरा नै रहै छइ। हमरो लगल आ भिनौज करेलौं।

अयोधी मन हल्लुक भेल। आब विचार दैह जे रामरूपकेँ देहमे खून कम छै, ओ तँ हमरे खूनटा मिलै छइ।

कुशेसरी- जेतेक खगता छै तइसँ दोबर दहक। आ ईहो बुझि लैह जे एकटंगा भाइक भार अपने कपारपर अछि।

(तहीकाल सोनमाकाका, रूपनीदादी आ चेथरूक प्रवेश..। अयोधी सोनमाकाका आ चेथरूकेँ गोड़ लगलक। कुशेसरी रूपनीदादीकेँ गोड़ लागि विछानपर बैसा दुनू हाथे घुट्ठी दाबए लगलैन। जहिना धौना खसल सोनमाकाकाक तहिना रूपनियोँ दादीक आ चेथरूओक। सभ गुम-सुम भेल बैसल..)

चेथरू- अयोधी, भगवान तोरा ऊपर ठनका खसेलखुन। मुदा..?

(सोनमाकाका आँखि उठा करवनो अयोधीपर तँ करवनो कुशेसरीपर तँ करवनो निच्चाँ कऽ तरे-तर रामरूपक कटल टाँगपर आ करवनो रामरूपक स्त्रीपर दौगबैत...)

रूपनीदादी- छोड़ह ऐ जाँतब-पीचबकेँ। पहिने रामरूपकेँ देखा दए।

(रूपनीदादीकेँ बाँहि पकैड़ कुशेसरी आँगन लऽ गेलि..)

सोनमाकाका- रामरूप तँ पितिऔत भाए छिअह किने?

अयोधी- हँ।

सोनमाकाका- ओकरा परिवारमे के सभ छै?

अयोधी- अपने दुनू प्राणी अछि आ एकटा तीन सालक बेटा छइ।

सोनमाकाका- खेती-पथारी?

अयोधी- किछु ने। जँ से रहितै तँ अहिना परदेशसँ टाँग कटा घर अबैत।

चेथरू- एना भेलै केना?

अयोधी- सबटा अपन कपारक दोख होइ छइ। कोनो की इहएटा ओइ करखन्नामे काज करै छेलै आकि औरो गोरे।

चेथरू- काज कोन करै छेलै?

अयोधी- कहाँ दन, लोहा करखन्नामे काजे करैत काल एकटा गोलका गुरैक आबि कऽ जाँघेपर खसलै।
(तहीबीच रूपनीदादी कुशेसरीक संग अबैत..)

कुशेसरी- *(ऐबते..)* अहूँ दुनू गोरे अँगने चलि कऽ कनी देखि ने लियौ?

चेथरू- दादी तँ देखि कऽ एबे केली हेन, पहिने हिनकेसँ बुझि ली।

रूपनीदादी- *(छाती पीटैत..)* एहेन अतहतह नै देखने छेलौं। बाप रे बाप! मनुखक नक्शे बदैल गेल अछि। हे भगवान, जखैन बिपैतिये देलहक तँ आरो किए ने बेसी कऽ देलहक जे दू-चारि मासमे लोक बिसैर जाइत।

सोनमाकाका- ओना अपना चसमसँ देखब नीके होइ छइ। मुदा किछु एहनो होइ छै जेकरा नहियेँ देखब नीक।

रूपनीदादी- पुरुखक जाइ जोकर आँगन नहियेँ अछि। वेचारी रामरूपक पत्नीकेँ ने नुआ-वस्त्रक ठेकान छै आ ने...।

चेथरू- तहूमे अपना सभ की कोनो ओझा-गुनी, डाक्टर छी जे लगसँ देखबे जरूरी अछि। अपनो सभ वएह देखब जे दादी कहती।

सोनमाकाका- घओपर नून छीटि विसतार करबसँ नीक नहियेँ देखब।

चेथरू- काका..?

सोनमाकाका- अखैन किछु बाजैक समय नै अछि। फेर आएब तखैन किछु आगूक बात विचारब।

चेथरू- काका एक तँ वेचाराकेँ अपना किछु ने छै तैपर अपने कोनो काजक नै रहल। जिवित शरीर तँ अन्न-पानि मंगबै करत। बिनु किछु केने धेने केतेक दिन चलत।

सोनमाकाका- यएह सभ ने बुझै-विचारैक अछि। तूँ दुनू गोरे अयोधी एक्के गाछक बखलोइया छह। जही गाछक बखलोइया रहै छै ओही गाछमे ने सटबो करै छइ।

चेथरू- अयोधी, तेहेन दोरस हवा बहि गेल अछि जे चिनो-पहचिन भोतिया गेल अछि। जेना गाछमे देखैत

हेबहक जे जे पात सुनटा गरे गाछक शोभा बढ़बैए वएह हवामे उनैट अपन असल रूप उनटा लइए।

अयोधी- भाय साहैब, अपना तँ ओते ऊहि नै अछि जे नीक अधला बात नीक जकाँ बुझबै मुदा एते अहाँ सबहक बीच बजै छी, जे देहक खुने नै ऐ देहसँ जेते भऽ सकतै तइमे पाछू नै हटब।

सोनमाकाका- बौआ, अखैन घरसँ बाहर धरिक सभ सोगाएल छी तँए, नीक जकाँ जिनगीकेँ नै बुझि सकब। ताबे अखैन जे जे जरूरी काज सभ अबैत जाइ छह तेकरा सम्हारैत चलह। पाँच-दस दिनक पछाइत निचेनसँ विचारि लेब।

रूपनीदादी- बौआ, समाजमे एक-सँ-एक अमीर आ एक-सँ-एक गरीब रहैए। मुदा समाजरूपी नाहपर केना जिनगीक समुद्र पार करैए।

चेथरू- दादी, जहिना समाजमे एक-दोसरक देखा-देखी आन्हरो-बहिर हँसैत-खेलैत जिनगी गुजारि लइए तहिना भगवान रामरूपोक परिवारकेँ पार लगौथिन।❍❍

शब्द संख्या: 975

तेसर दृश्य-

(ओसारपर कोशिला (रामरूपक पत्नी) बैसल, आँखिसँ नोरक टघार चलैत। आगूमे तीन बर्खक बेटा ठाढ़ भऽ हाथसँ नोर पोछैत..)

कुशेसरी- कनियाँ, कनैत-कनैत मरियो जेबह तैयो दुख मेटेतह। जखैन काँच बरतन ठाढ़ छी, हवा-विहाड़ि, पानि-पत्थर, सदासँ लगैत आएल आ आगूओ लैगते रहत। मुदा नान्हिटा बगरा-मेना कहाँ मेटा गेल। हम सभ तँ मनुख छी।

(आँखि उठा कोशिला कुशेसरीक निच्चाँसँ ऊपर निहारैत किछु बजैक विचार मनमे उठैत, मुदा स्पष्ट बोली नै फुटैत..)

कोशिला- क-अ... क...इ...इ...।

कुशेसरी- तूँ ने अँगनामे बैस कऽ भरि दिन कनैत रहै छह मुदा हम तँ मौगी सबहक गप्पो सुनै छी किने।

कोशिला- के की बजैए?

कुशेसरी- जेकरा जे मन फुरै छै से बाजैए। मुदा सुनबो करिहअ तँ उत्तर नै दिहक। सुनि कऽ कानेमे समेट-समेट रखैत जहिहऽ।

कोशिला- ई की सुनलखिन?

कुशेसरी- घरक लोक छिअ तँए तोरा कहबे करबह। परिवारक कोनो गप परिवारक लोकसँ छिपाबी नै। छिपाबी ओतबे जे जेकरा बुझैक जरूरत नै होइ।

कोशिला- *(ऑचरसँ आँखि-मुँह पोछैत.. आ कनी सक्कत होइत...)* की..इ...इ सुनलखिन? कनी नीक जकाँ कहथु?

कुशेसरी- अगुता कऽ ने किछु सोचह आ ने किछु करह। भगवान समुद्र सन छाती देने छैथ। गीधक सरापे जँ गाए मरैत तँ वएह उपैट गेल रहितै।

कोशिला- किछो तँ बाजथु?

कुशेसरी- कनियाँ, मौगी सभ कुट्टी-चौल करैए जे एहेन जुआन मौगी टंगकट्टा घर...।

कोशिला- काकी, गरीब छी एकर माने ई नै ने जे मनुखे नै छी।

कुशेसरी- रूपनीदादीकेँ बजबै ले अयोधीकेँ पठौने छिऐ। ऐबते हेती। तखैन औरो गप करब।

(रूपनीदादीक संग अयोधीक प्रवेश..)

(रूपनीदादीकेँ देखिते कोशिला दुनू हाथे दुनू पएर छानि..)

कोशिला- दादी, की ई सभ अपना नगरसँ बैलाइए देथिन?

रूपनीदादी- कनियाँ, पएर छोड़ू। *(कोशिला पएर छोड़ि दैत...)* कनियाँ कान खोलि सुनि लिअ। ने केकरो भगौने कियो नगरसँ भागि सकैए आ ने दिन-राति कनलासँ दुख मेटा सकैए।

कुशेसरी- एक लाखक गप कहलखिन दादी।

रूपनीदादी- गपक मोल लाख नै होइए। होइए ओइ काजक जइमे ओ गप सटल रहैए। छुछे कनलासँ जँ होइतै तँ घरसँ बाहर धरि कानि-कानि लोक देवी-देवता तककेँ कहिते छैन। मुदा फल की होइ छै?

(दादीक आँखिपर कोशिला आँखि गड़ा..)

कोशिला- दादी, जे विधाता लिखलैन, ओ भोगब।

रूपनीदादी- कनियाँ, अहाँकेँ तँ एकटा बेटो अछि, जे दस बर्खक बाद स्वामी तुल्य भऽ जाएत। तखैन तँ गनल कुटिया नापल झोर भेल। दस बर्खक दुख थोड़े बड़ भारी होइ छइ। अही माटि-पानिक सीता रावणक लंकामे अहूसँ बेसी दिन रहल रहैथ।

कोशिला- *(मुस्कियाइत..)* दादी, हिनका सबहक नजैर चाही।

रूपनीदादी- कनियाँ, हम सभ ओहन धरतीपर जनम लेने छी जे सदिकाल शक्ति उगलैत रहैए। तोरा तँ बेटो छह जे ओ पूबरिया पोखैर देखै छहक?

कोशिला- कोन दऽ कहै छैथन दादी। पीपरक गाछ लगहक, आकि परती लगहक?

रूपनीदादी- पीपरक गाछ लगहक। ओ पोखैर प्रेमा दीदीक खुनौल छिऐन। वेचारी बाल-विद्धव भऽ गेल छेली। गामक लोक केतबो हिलौलकैन-डोलौलकैन दोसर बिआह नै केलखिन।

कुशेसरी- सासुर नै बसलखिन?

रूपनीदादी- एक्को दिन सासुर नै गेल रहथिन। मुदा धैनवाद समाजकेँ दी जे वेचारीक जिनगीक ठौर धड़ा देलकैन आ तोहूसँ बेसी ओइ वेचारीकेँ धैनवाद दिऐन जे अपन माए-बापक पार उतारैत, जिनगीक अन्तिम समैमे पोखैर खुना समाजक सेवामे लगा कऽ मरली।

कुशेसरी- दादी, पहिलुका जुग-जमानाक परतर आब हेतै?

रूपनीदादी- किए ने हेतइ।
(कहि चुप भऽ किछु सोचए लगैत...)

कोशिला- चुप किए भेलखिन दादी। आगूओक किछु कहथुन?

रूपनीदादी- *(गम्भीर होइत..)* कनियाँ ने जुग-जमाना बदलल आ ने लोक बदलल।

कोशिला- तखैन?

रूपनी- बदलल लोकक विचार आ ओकर जिनगी।

कोशिला- केना?

रूपनी- सुनै छहक ने फल्लाँ गाम नीक आ फल्लाँ गाम अधला।

कोशिला- हँ, से तँ सुनबे नै करै छी बिसाएलो अछि।

रूपनीदादी- *(मुस्कियाइत..)* बिसाएलो छह! केना बिसाएल छह?

कोशिला- तीन बहिनमे छोट हम छी। जेठकी बहिनक बिआह छतनाराहीमे ठीक भेल। कहाँदन बड़ सुन्नर घर-बर रहै मुदा बिआह नै भेलैन?

रूपनीदादी- से किए?

कोशिला- घर-बर देखि बाबू-काका दुनू भाँइ बिआहक सभ बात-विचार पक्का कऽ लेलैन। पक्का भेलापर मामासँ विचार करए मात्रिक गेला।

रूपनीदादी- बात-विचार करैसँ पहिने ने राय-विचार कऽ लइतैथ।

कोशिला- औगताइ भऽ गेलैन।

रूपनीदादी- की औगताइ?

कोशिला- दुनू भाँइ भोज खा कऽ घुमल रहैथ, बरी-तरकारी किछु बेसी खेने रहैथ। चालि पाबि पियास लगलैन। रस्ताकातमे इनार देखि ठाढ़ भेला। मुदा डोल नै रहने पानि केना पीबतैथ।

रूपनीदादी- (मुस्की दैत..) तखैन की केलैन?

कोशिला- इनार लगसँ आगू बढ़ि एकटा दुआरपर जा जोरसँ हल्ला करैत डोल मंगलखिन। आँगनसँ एकटा अधवेसू डोल लेने बहराइत पुछलखिन।

रूपनीदादी- की पुछलखिन?

कोशिला- नाओं गाओं आ जाति।

रूपनीदादी- जाति मिलते ओ अधवेसू हँसैत बजला जखैन जाति-कुटुम छी तखैन एना अछोप जकाँ पानि पिआएब उचित हएत। पानि पीब बिआहक गप-सप्प पक्का भऽ गेल।

रूपनीदादी- हँ, तखैन तँ ठीके औगताइ भेल। मात्रिकक लोक की विचार देलकैन?

कोशिला- बेसी बात तँ नै बुझल अछि मुदा अधला गाम कहि मनाही केलकैन।

रूपनीदादी- कनियाँ एक्के गाम एक जातिक नीक होइए आ दोसराक अधला।

कोशिला- गाम तँ गामे होइए। फेर एना किए होइए।

रूपनीदादी- *(मुस्कियाइत, गम्भीर होइत..)* कनियाँ, की कहबह आ केते कहबह। भगवान अखैन अपने फेरा लगा देलखुन। अपन दिन-दुनियाँक बात सोचह।

कुशेसरी- बेस कहलखिन दादी। ठनका ठनकै छै तँ लोक अपना मत्थापर हाथ दइए। मुदा तँए कि ठनका मानि जेतै आकि माथ परहक हाथसँ रोका जेतइ। लेकिन एकटा तँ होइए जे लोक अपन रच्छा अपना हाथे करए चाहैए।

रूपनीदादी- बेस कहलिऐ। एकटा बात तँ तरे पड़ि गेल।

कोशिला- से की?

रूपनीदादी- जुग-जमाना बदलैक बात उठल छेलइ। ने दिन-राति बदललहें आ ने माटि-पानि, पहाड़। बदललहें

लोकक आचार-विचार। एकटा बात तँ अपनो ठहकैए जे जेना पहिने समाजक धारणा छल तइमे बहुत बदलाव आएल हेन।

कुशेसरी- दादी, आब हमहूँ कम दिनक नै भेलौं। ज हिया सासुर आएल रही तहिया जे लाज करैबला पुरुख छला, हुनकापर नजैर पड़िते जेना मुँह झाँपए लगै छेलौं तहिना हुनको सबहक नजैर पड़िते या तँ निच्चाँ मुहेँ मुड़ी-गोंति लइ छला वा दोसर दिस ताकए लगै छला।

रूपनीदादी- बेस कहलहक। हमहूँ बुढ़ भेलों, आँखिक इजोतो घटि गेल, तैयो देखै छी तँ लाज होइए। अनेरे भगवान कोन सनतापे देखैले जिया कऽ रखने छैथ।

कुशेसरी- से की दादी एक्केटाकेँ कहबै। मर्द-औरत दुनूक चालि एकेरंग भऽ गेल अछि।

रूपनीदादी- खाएर, जे अछि जेतए अछि से तेतए रहऽ। (कोशिला दिस देख) कनियाँ, समाज बड़ पैघ दुनियाँ छी। जाबे मनुखकेँ प्राण रहत ताबे केतौ दुनियेँमे रहत। एहेन बिपैत भगवान तोरेटा नै देलखुन हेन, तोरा सन-सन बहुतो अछि।

कुशेसरी- दादी, सएह तँ दुनू माए -बेटा कहै छिऐ जे दुनू गोरेक जड़ि एक्के अछि। देखै छिऐ जे सत्-सत् पीढ़ीक परिवार सभ अछि। हमरा तँ दुइए पीढ़ीक भेल हेन। तँए की दुनू दू भऽ गेल।❍❍

शब्द संख्या: 996

अन्तिम दृश्य-

(अयोधी, कुशेसरी आ कोशिला ओसारपर बैसल।)

अयोधी- माए, जानियेँ कऽ तँ हम सभ गरीब छी तँ दुख केकरा हेतइ। तोहूमे जँ हिम्मत हारिये देब तँ एक्को क्षण जीब पाएब।

कुशेसरी- ई कोनो नव गप छी। कर्ता पुरुखक ई दुनियाँ छी। कर्ता पुरुख जेहेन रहत ओ अपना सन दु नियाँ बना, बास करत।

अयोधी- (कोशिलासँ) देखू कनियाँ, जहिना अपना मनक मालिक कियो होइए। तहिना अहूँ छी। तँए अपन ऐगला जिनगीक रस्ता अपने धड़ए पड़त।

कुशेसरी- बेस कहलहक बौआ। जेना लोक सभकेँ देखै छिऐ जे चरि-चरिटा धिया-पुता छोड़ि दोसर घर चलि जाइए। तहिना जँ तोहूँ भागए चाहबह तँ कियो पकैड़ कऽ केते दिन रखि सकतह। मुदा?

कोशिला- मुदा की?

कुशेसरी- यएह जे अपना सबहक बाप-दादाक कएल कीर्ति मेटा रहल अछि।

कोशिला- कनी बुझा कऽ कहथु?

कुशेसरी- सभकेँ नीक-अधला काज करबाक छुट अछि। जेकरा जे मन फुरै छै से करैए। मुदा मनुख जानवर नै विवेकी जीव छी। तँए नीक-अधलाक विचार तँ करए पड़तै।

कोशिला- की नीक अधला?

कुशेसरी- जहिना अपन कर्तव्य पूरा केलापर मरद पुरुख बनैए तहिना स्त्रीगणो ने नारी। दुनूकेँ अपन -अपन काजक रस्ता छइ। रस्ताक संग किछु संकल्प छै, जे जिनगीकेँ जिनगी बनबै छइ।

कोशिला- नै बुझलिऐन हिनकर बात?

कुशेसरी- देखहक, तोरा कियो खुटामे बान्हि कऽ नै रखि सकै छह मुदा अपन जिनगीक बान्हसँ बन्हि जरूर रहि सकै छह। ई तँ तोरे ने बुझए पड़तह जे हमरे दुआरे घरबला अपन टाँग गमा अधमरू भेल अछि।

दुधमुहाँ बच्चा सेहो अछि, तैठीन कोन धरानी चलए पड़त।

(तही बीच जीवनक प्रवेश..)

अयोधी- (जीवनसँ) केतए रहै छी, किनकासँ काज अछि।

जीवन- ओना हमरो घर एही इलाका अछि मुदा रहै छी दिल्लीमे। हमरा कम्पनीमे रामरूप काज करै छला हुनके परिवारसँ किछु खास विचार करए आएल छी।

अयोधी- हुनकर भाए हमहीं छिऐन। ओ तँ अपने ओछाइनपर पड़ल छैथ, उठि-बैस नहियेँ होइ छैन। तखैन बाजू, केहेन विचार करबाक अछि।

जीवन- कारखानाक मालिक राय-विचार लेल पठौलैन अछि।

अयोधी- कम्पनीक पठौल आदमी छी?

जीवन- हँ।

अयोधी- जखैन देहमे शक्ति छेलइ, हाथ-पएर दुरूस छेलै तखैन तँ ओभर टाइमक लोभ देखा-देखा दिन-राति काज करा बेकम्मा बना घर पठा देलक। आ..?

जीवन- कम्पनीक जे निअम छै ओहि हिसाबे ने काज हएत?

अयोधी- निअम बनबैकाल काजो केनिहार (श्रमिक) सँ राय-विचार केने छेलिऐ?

जीवन- देखू, जहिना रामरूप कम्पनीक स्टाफ छला तहिना हमहूँ छी, तँए ऐ प्रश्नक उत्तर नै दऽ पएब।

अयोधी- तखैन?

जीवन- जे सभ सुविधा भेटै छै से सभ सुविधा हिनको (रामरूप) भेटतैन।

अयोधी- की सभ भेटतैन?

जीवन- इलाज करा देलैन। तत्काल पान सए रुपैआक संग घर पहुँचा देलकैन।

अयोधी- बस?

जीवन- नै। एतबे नै। जँ पत्नी काज करए चाहती तँ नौकरियो देतैन आ रामरूपक नाओंसँ एक लाखक बीमा सेहो कऽ देतैन जे मुइला पछाइत परिवारकेँ भेटतैन।

अयोधी- जीबैतमे की सभ भेटतैन?

जीवन- परिवारकेँ ओही दरमाहाक नोकरी आ रहैक डेरा।

अयोधी- हम सभ गामक समाजमे रहै छी, तँए आगू किछु करैसँ पहिने समाजसँ विचार लेब जरूरी अछि।

जीवन- बहुत बढ़ियाँ।

अयोधी- (माएसँ...) जाबे हम समाजक पाँच गोरेकेँ बजा अनै छी ताबे हिनका चाह जलखै करा दिहनु।

कुशेसरी- बड़ बढ़ियाँ।

(अयोधी जाइए। अयोधीकेँ परोछ होइते कोशिला अधझॅप्पु मुँह सोलहन्नी उघारि...)

कोशिला- जहिना सोलह-सोहल, अठारह-अठारह घन्टा पतिसँ काज लइ छेलौं तहिना ने हमरोसँ कराएब ?

जीवन- (कनी गुम्म होइत..) की मतलब?

कोशिला- मतलब यएह जे जखैन सोलह-अठारह घन्टा कररवन्नामे काज करब, तखैन अपने करवन भानस-भात करब आ खा-पी अराम करब।

जीवन- एकरो जवाब नै देब।

कोशिला- (झपटैत..) एतबे नहि, जखैन अपनो जोकर समय अपने नै भेटत, तखैन तीन बर्खक दूध -मुहाँ बच्चा आ अपंग पतिक सेवा करखन करब।

जीवन- (प्रलोभन दैत..) अहाँकेँ थोड़े करखन्नामे काज करए पड़त?

कोशिला- तब?

जीवन- अहाँकेँ कोठीएक काज भेटत। जेहने काज हल्लुक तेहने समैयोक। कोठीएमे रहैयोक बेवस्था रहत आ अपूछ खेनाइयो-पिनाइ हएत।

कोशिला- (किछु सहमैत..) जँ हमरा इज्जतक संग खेलबाड़ हएत तखैन के बँचौत?

जीवन- मालिकक नजैर सभपर रहै छैन। की मजाल छी जे एकटा माछियो-मच्छर, बिना हुनका पुछने कोठीक भीतर जा-आबि सकैए।

कोशिला- (आँखि टेढ़ करैत..) ई तँ बेस कहलौं जे बाहरसँ माछियो-मच्छर नै जा सकैए मुदा जँ कोठीक भीतरेक लोक..?

जीवन- ओना अहाँक शंका, किछु अंशमे ठीके अछि मुदा घनेरो औरत, जुआनसँ अधबेसू धरि, कोठीक भीतर काज करैए।

कुशेसरी- बजलौं तँ बेस बात। मुदा जहिना, ने सभ पुरुखक चालि-ढालि बेवहार एक रंग होइ छै तहिना तँ स्त्रीगणोक अछि। एक्के काजकेँ कियो खेल बुझैए कियो इज्जत।

(सोनमाकाका, चेथरूक संग अयोधीक प्रवेश..)

कोशिला- भने कक्को आ भैयौ आबिये गेला।

अयोधी- काका, दिल्लीसँ जीवन आएल छैथ।

सोनमाकाका- कनियाँ, की सभ जीवन कहै छैथ?

कोशिला- कहै छैथ जे अहाँकेँ नोकरी भेटत।

सोनमाकाका- अपन की विचार होइए। अपन जे विचार हएत सहए ने करब।

कोशिला- काका, हिनका सभकें किए बजौलयैन। जँ अपना विचारे करबाक रहैत तँ कऽ नेने रहितौं किने।

चेथरू- कनियाँ, अपन की विचार अछि, से तँ अपने ने बाजब।

कोशिला- भैया, ई सभ जे विचार देता सएह ने करब।

चेथरू- (जीवनसँ) जँ कनियाँ (कोशिला) नोकरी नै करै चाहैथ तखैन की सभ देबैन?

जीवन- अपना रहने जे सभ सुविधा भेटतैन ओ नै रहने थोड़े भेट पौतैन।

चेथरू- से की?

जीवन- तेते पैघ कारोबार अछि जे के केकरा देखत। सभकें अपने काज तेते छै जे केकरो दिस केकरो तकबाक पलखैत छइ।

चेथरू- गाममे रहनिहारि मुँह दुब्बरि औरतकें करखन्नाबला सभ मनुखो बुझैए।

सोनमाकाका- चेथरू बातकेँ अनेरे केते चेथाड़ै छह। छोड़ह ऐ सभकेँ। बाजू कनियाँ अहाँक की विचार अछि?

कोशिला- काका, सुनलाहा नै घरेबलाकेँ देखै छिऐन जे परिभुत्ता छेलैन ताबे गाए-महींस जकाँ लाठी देखा-देखा दुहैत रहलैन आ जखैन पैरभुत्ता घटलैन तखैन असमसानक मुरदा जकाँ उठा कऽ ऐठाम दऽ गेलैन। तहिना जँ..?

सोनमाकाका- नीक जकाँ सोचि-विचारि लिअ। गामक समाज मनुखकेँ छाती चढ़ा बसबैए, जे शहर-बजारमे थोड़े अछि।

कोशिला- हँ, ई तँ बेस कहलैथ काका।

सोनमाकाका- एतबे नै कनियाँ, आँखि उठा कऽ देखियौ, निसभेर रातिमे जँ केतौ चोर-चहार अबै छै आकि राजा-दैव होइ छै तँ जे जेतए सुनैए ओ ओतैसँ हल्ला करैत दौगैए। मुदा...।

कोशिला- मुदा की?

सोनमाकाका- की कहबह आ केते कहबह। मुदा बिना कहनौं तँ नहियेँ बुझबहक। शहर-बजारमे देखबहक जे ऊपरमे ठनका खसल अछि आ दोसर मुँह घुमा कऽ जा रहल अछि।

चेथरू- (बिच्चेमे..) काका, एना किए कहै छिऐ, एना ने कहियौ जे बच्चामे एक्के गाछ एकटा विशाल वृक्ष बनि जाइए आ दोसर लत्ती बनि ओहन भऽ जाइए जे अपने एक्को-हाथ ठाढ़ होइक तागैत नै रहै छै, मुदा माटिक सिनेह ओहन होइ छै जे वएह वृक्ष बाँहि पसारि ओइ लत्तीकेँ अपना ऊपर फुनगी धरि बढ़ैक रस्ता दइए।

सोनमाकाका- बेस कहलहक चेथरू। एकबेर तोहूँ अयोधी बाजह। कनियाँ अखैन पीड़िताएल छैथ तँ...।

अयोधी- काका, जहिना सभ दिन गामक खुट्टा मानैत एलौं तहिना अखनो मानै छी। हम सभ तँ गरीब छी समाजेक आशपर जीबै छी। ई कखनो नै मनमे अबैए जे बेर-बिपैत पड़त तँ समाज छोड़ि देत। तँए जे विचार देब तइमे एक्को-डेग पाछू नै खिंचब।

कोशिला- (उफनैत..) भैया, काका, बाबा समाजक सभ

कियो। जाबे धरि कोशिलाक देहमे पैरभुत्ता रहतै ताबे धरि कहियो पएर पाछू नै करत। जइ दिन पैरभुत्ता टुटतै तइ दिन समाजेमे भीख मांगब। भलेँ कियो भिक्षु किए ने कहए।

((समाप्त))

शब्द संख्या: 1094